قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

سَيَقُولُ

पारा - 2

eParah

سَيَقُوْلُ	السُّفَهَآءُ	مِنَ النَّاسِ	مَا	وَلّٰىهُمْ	عَنْ قِبْلَتِهِمُ
अनक़रीब कहेंगे	बेवक़ूफ़/नादान	लोगों में से	किसने	फेर दिया उन्हें	उनके क़िबले से

الَّتِىْ	كَانُوْا	عَلَيْهَا ؕ	قُلْ	لِّلّٰهِ	الْمَشْرِقُ	وَالْمَغْرِبُ ؕ
वो जो	थे वो	उस पर	कह दीजिए	अल्लाह के लिए है	मशरिक़	और मग़रिब

يَهْدِىْ	مَنْ	يَّشَآءُ	اِلٰى	صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ ﴿142﴾	وَكَذٰلِكَ
वो हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	तरफ़	रास्ते	सीधे के	और इसी तरह

جَعَلْنٰكُمْ	اُمَّةً	وَّسَطًا	لِّتَكُوْنُوْا	شُهَدَآءَ	عَلَى النَّاسِ
बनाया हमने तुम्हें	एक उम्मत	वस्त/दर्मियानी	ताकि तुम हो जाओ	गवाह	लोगों पर

وَيَكُوْنَ	الرَّسُوْلُ	عَلَيْكُمْ	شَهِيْدًا ؕ	وَمَا	جَعَلْنَا	الْقِبْلَةَ
और हो जाए	रसूल	तुम पर	गवाह	और नहीं	बनाया हमने	उस क़िबले को

الَّتِىْ	كُنْتَ	عَلَيْهَآ	اِلَّا	لِنَعْلَمَ	مَنْ	يَّتَّبِعُ	الرَّسُوْلَ
वो जो	थे आप	जिस पर	मगर	ताकि हम जान लें	कौन	पैरवी करता है	रसूल की

مِمَّنْ	يَّنْقَلِبُ	عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ	وَاِنْ	كَانَتْ	لَكَبِيْرَةً	اِلَّا
उससे जो	पलट जाता है	अपनी दोनों एड़ियों पर	और बिलाशुबा	थी (ये बात)	यक़ीनन बड़ी भारी	मगर

عَلَى الَّذِيْنَ	هَدَى	اللّٰهُ ؕ	وَمَا	كَانَ	اللّٰهُ	لِيُضِيْعَ
उन पर (नहीं) जिन्हें	हिदायत दी	अल्लाह ने	और नहीं	है	अल्लाह	कि वो ज़ाया कर दे

اِيْمَانَكُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	بِالنَّاسِ	لَرَءُوْفٌ	رَّحِيْمٌ ﴿143﴾	قَدْ
ईमान तुम्हारा	बेशक	अल्लाह	लोगों पर	यक़ीनन शफ़ीक़ है	निहायत रहम करने वाला है	तहक़ीक़

نَرٰى	تَقَلُّبَ	وَجْهِكَ	فِى السَّمَآءِ ۚ	فَلَنُوَلِّيَنَّكَ	قِبْلَةً
हम देखते हैं	बार-बार फिरना	आपके चहरे का	आसमान की तरफ़	पस अलबत्ता हम ज़रूर फेर देंगे आपको	उस क़िबले (की तरफ़)

تَرْضٰىهَا ۖ	فَوَلِّ	وَجْهَكَ	شَطْرَ	الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ ؕ	وَحَيْثُ مَا
आप राज़ी हो जाएंगे जिससे	पस फेर लीजिए	अपने चहरे को	तरफ़	मस्जिदे	हराम के	और जहां कहीं

كُنْتُمْ	فَوَلُّوْا	وُجُوْهَكُمْ	شَطْرَهٗ ؕ	وَاِنَّ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا
हो तुम	पस फेर लो	अपने चेहरों को	तरफ़ उसके	और बेशक	वो जो	दिए गए

الْكِتٰبَ	لَيَعْلَمُوْنَ	اَنَّهُ	الْحَقُّ	مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ	وَمَا	اللّٰهُ
किताब	अलबत्ता वो जानते हैं	बेशक वो	हक़ है	उन के रब की तरफ़ से	और नहीं	अल्लाह

بِغَافِلٍ	عَمَّا	يَعْمَلُوْنَ ﴿144﴾	وَلَئِنْ	اَتَيْتَ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا
गाफ़िल	उससे जो	वो अमल करते हैं	और अलबत्ता अगर	लाएं आप (उनके पास)	वो जो	दिए गए

الْكِتٰبَ	بِكُلِّ	اٰيَةٍ	مَّا	تَبِعُوْا	قِبْلَتَكَ ۚ	وَمَآ	اَنْتَ
किताब	हर	निशानी	नहीं	वो पैरवी करेंगे	आपके क़िबले की	और नहीं	आप

بِتَابِعٍ	قِبْلَتَهُمْ ۚ	وَمَا	بَعْضُهُمْ	بِتَابِعٍ	قِبْلَةَ	بَعْضٍ ؕ
पैरवी करने वाले	उनके क़िबले की	और ना	बाज़ उनका	पैरवी करने वाला है	क़िबले की	बाज़ के

وَلَئِنِ	اتَّبَعْتَ	اَهْوَآءَهُمْ	مِّنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَكَ	مِنَ الْعِلْمِ ۙ
और अलबत्ता अगर	पैरवी की आपने	उनकी ख्वाहिशात की	बाद इसके	जो	आ गया आपके पास	इल्म में से

وقف لازم

اِنَّكَ	اِذًا	لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿145﴾	اَلَّذِيْنَ	اٰتَيْنٰهُمُ	الْكِتٰبَ
बेशक आप	तब	ज़रूर ज़ालिमों में से होंगे	वो लोग जो	दी हमने उन्हें	किताब

يَعْرِفُوْنَهٗ	كَمَا	يَعْرِفُوْنَ	اَبْنَآءَهُمْ ؕ	وَاِنَّ	فَرِيْقًا	مِّنْهُمْ
वो पहचानते हैं उसे	जैसा कि	वो पहचानते हैं	अपने बेटों को	और बेशक	एक गिरोह (के लोग)	उनमें से

وقف منزل

لَيَكْتُمُوْنَ	الْحَقَّ	وَهُمْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿146﴾	اَلْحَقُّ	مِنْ رَّبِّكَ
अलबत्ता वो छुपाते हैं	हक़ को	हालांकि वो	वो जानते हैं	हक़	आपके रब की तरफ़ से है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 17 6 1

فَلَا تَكُوْنَنَّ	مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿147﴾ ع	وَلِكُلٍّ	وِّجْهَةٌ	هُوَ
पस हरगिज़ ना हो आप	शक करने वालों में से	और हर एक के लिए	एक सिम्त है	वो

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

مُوَلِّيْهَا	فَاسْتَبِقُوا	الْخَيْرٰتِ ؕ	اَيْنَ مَا	تَكُوْنُوْا	يَاْتِ
(मुंह) फेरने वाला है उसकी तरफ़	पस सबक़त करो	नेकियों में	जहां कहीं भी	तुम होगे	ले आएगा

بِكُمُ	اللّٰهُ	جَمِيْعًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿148﴾
तुम्हें	अल्लाह	सबको	बेशक	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है

وَمِنْ حَيْثُ	خَرَجْتَ	فَوَلِّ	وَجْهَكَ	شَطْرَ	الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ ؕ
और जहां कहीं से	निकलें आप	तो फेर लीजिए	चेहरा अपना	तरफ़	मस्जिदे	हराम के

وَاِنَّهٗ	لَلْحَقُّ	مِنْ رَّبِّكَ ؕ	وَمَا	اللّٰهُ	بِغَافِلٍ	عَمَّا
और बेशक वो	अल्बत्ता हक़ है	आपके रब की तरफ़ से	और नहीं है	अल्लाह	ग़ाफ़िल	उससे जो

تَعْمَلُوْنَ ﴿149﴾	وَمِنْ حَيْثُ	خَرَجْتَ	فَوَلِّ	وَجْهَكَ	شَطْرَ
तुम अमल करते हो	और जहां कहीं से	निकलें आप	तो फेर लीजिए	चेहरा अपना	तरफ़

الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ ؕ	وَحَيْثُ مَا	كُنْتُمْ	فَوَلُّوْا	وُجُوْهَكُمْ	شَطْرَهٗ ؕ
मस्जिदे	हराम के	और जहां कहीं भी	हो तुम	तो फेर लो	अपने चेहरों को	तरफ़ उसके

لِئَلَّا	يَكُوْنَ	لِلنَّاسِ	عَلَيْكُمْ	حُجَّةٌ ۗ	اِلَّا	الَّذِيْنَ
ताकि ना	हो	लोगों के लिए	तुम पर	कोई हुज्जत	सिवाए	उनके जिन्होंने

ظَلَمُوْا	مِنْهُمْ ۗ	فَلَا	تَخْشَوْهُمْ	وَاخْشَوْنِيْ ۗ	وَلِاُتِمَّ
ज़ुल्म किया	उनमें से	तो ना	तुम डरो उनसे	और डरो मुझसे	और ताकि मैं पूरी कर दूं

نِعْمَتِيْ	عَلَيْكُمْ	وَلَعَلَّكُمْ	تَهْتَدُوْنَ ﴿150﴾ ۙ	كَمَآ	اَرْسَلْنَا
अपनी नेअमत	तुम पर	और ताकि तुम	तुम हिदायत पा जाओ	जैसा कि	भेजा हमने

فِيْكُمْ
तुम में

رَسُوْلًا	مِّنْكُمْ	يَتْلُوْا	عَلَيْكُمْ	اٰيٰتِنَا	وَيُزَكِّيْكُمْ
एक रसूल	तुम में से	वो तिलावत करता है	तुम पर	आयात हमारी	और वो पाक करता है तुम्हें

وَيُعَلِّمُكُمُ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ	وَيُعَلِّمُكُمْ	مَّا	لَمْ	تَكُوْنُوْا
और वो तालीम देता है तुम्हें	किताब	और हिक्मत की	और वो तालीम देता है तुम्हें	उसकी जो	ना	थे तुम

تَعْلَمُوْنَ ؕ (151)	فَاذْكُرُوْنِيْٓ	اَذْكُرْكُمْ	وَاشْكُرُوْا لِيْ	وَلَا	تَكْفُرُوْنِ (152) ع
तुम इल्म रखते	पस याद करो मुझे	मैं याद करूंगा तुम्हें	और शुक्र करो मेरा	और ना	तुम नाशुक्री करो मेरी

ع 18 5 2 معانقة 3

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوا	اسْتَعِيْنُوْا	بِالصَّبْرِ	وَالصَّلٰوةِ ؕ	اِنَّ
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	तुम मदद मांगो	साथ सब्र	और नमाज़ के	बेशक

اللّٰهَ	مَعَ	الصّٰبِرِيْنَ (153)	وَلَا	تَقُوْلُوْا	لِمَنْ	يُّقْتَلُ
अल्लाह	साथ है	सब्र करने वालों के	और ना	तुम कहो	उन्हें जो	क़त्ल कर दिए जाऐं

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	اَمْوَاتٌ ؕ	بَلْ	اَحْيَآءٌ	وَّلٰكِنْ	لَّا تَشْعُرُوْنَ (154)
अल्लाह के रास्ते में	कि मुर्दा हैं	बल्कि	(वो) ज़िंदा हैं	और लेकिन	नहीं तुम शऊर रखते

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ	بِشَيْءٍ	مِّنَ الْخَوْفِ	وَالْجُوْعِ	وَنَقْصٍ
और अलबत्ता हम ज़रूर आज़माऐंगे तुम्हें	साथ किसी भी चीज़ के	ख़ौफ़ से	और भूख से	और कमी (करके)

مِّنَ الْاَمْوَالِ	وَالْاَنْفُسِ	وَالثَّمَرٰتِ ؕ	وَبَشِّرِ	الصّٰبِرِيْنَ (155) ۙ
मालों से	और जानों से	और फलों से	और ख़ुश ख़बरी दे दीजिए	सब्र करने वालों को

الَّذِيْنَ	اِذَآ	اَصَابَتْهُمْ	مُّصِيْبَةٌ ۙ	قَالُوْٓا	اِنَّا	لِلّٰهِ	وَاِنَّآ
वो लोग जो	जब	पहुंचती है उन्हें	कोई मुसीबत	वो कहते हैं	बेशक हम	अल्लाह ही के लिए हैं	और बेशक हम

اِلَيْهِ	رٰجِعُوْنَ (156) ؕ	اُولٰٓئِكَ	عَلَيْهِمْ	صَلَوٰتٌ	مِّنْ رَّبِّهِمْ
तरफ़ उसी के	लौटने वाले हैं	यही वो लोग हैं	जिन पर	नवाज़िशें/इनायतें हैं	उनके रब की तरफ़ से

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْمَرْوَةَ	الصَّفَا	اِنَّ	الْمُهْتَدُوْنَ (157)	هُمُ	وَاُولٰٓئِكَ	وَرَحْمَةٌ قف
और मरवह	सफ़ा	बेशक	जो हिदायत याफ़्ता हैं	वो	और यही लोग हैं	और रहमत है

فَلَا	اعْتَمَرَ	اَوِ	الْبَيْتَ	حَجَّ	فَمَنْ	اللّٰهِ ج	مِنْ شَعَآئِرِ
तो नहीं	उमरा करे	या	बैतुल्लाह का	हज करे	पस जो कोई	अल्लाह की	निशानियों में से हैं

خَيْرًا لا	تَطَوَّعَ	وَمَنْ	بِهِمَا ط	يَّطَّوَّفَ	اَنْ	عَلَيْهِ	جُنَاحَ
कोई नेकी	ख़ुशी से करे	और जो कोई	उन दोनों का	वो तवाफ़ (सई) करे	कि	उस पर	कोई गुनाह

مَآ	يَكْتُمُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	عَلِيْمٌ (158)	شَاكِرٌ	اللّٰهَ	فَاِنَّ
उसे जो	छुपाते हैं	वो लोग जो	बेशक	ख़ूब जानने वाला है	क़द्रदान है	अल्लाह	तो बेशक

بَيَّنّٰهُ	مَا	مِنْۢ بَعْدِ	وَالْهُدٰى	مِنَ الْبَيِّنٰتِ	اَنْزَلْنَا
वाज़ेह कर दिया हमने उसे	जो	बाद इसके	और हिदायत में से	वाज़ेह निशानियों में से	नाज़िल किया हमने

وَيَلْعَنُهُمُ	اللّٰهُ	يَلْعَنُهُمُ	اُولٰٓئِكَ	فِي الْكِتٰبِ لا	لِلنَّاسِ
और लाअनत करते हैं उन पर	अल्लाह	लाअनत करता है उन पर	यही वो लोग हैं	किताब में	लोगों के लिए

وَبَيَّنُوْا	وَاَصْلَحُوْا	تَابُوْا	الَّذِيْنَ	اِلَّا	اللّٰعِنُوْنَ (159) لا
और वाज़ेह कर दिया	और इस्लाह की	तौबा की	उनके जिन्होंने	सिवाए	लाअनत करने वाले

الرَّحِيْمُ (160)	التَّوَّابُ	وَاَنَا	عَلَيْهِمْ ج	اَتُوْبُ	فَاُولٰٓئِكَ
निहायत रहम करने वाला हूं	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला हूं	और मैं	उन पर	मैं महरबान होता हूं	तो यही वो लोग है

اُولٰٓئِكَ	كُفَّارٌ	وَهُمْ	وَمَاتُوْا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ
यही वो लोग हैं	काफ़िर थे	इस हाल में कि वो	और वो मर गए	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	बेशक

خٰلِدِيْنَ	اَجْمَعِيْنَ (161) لا	وَالنَّاسِ	وَالْمَلٰٓئِكَةِ	اللّٰهِ	لَعْنَةُ	عَلَيْهِمْ
हमेशा रहने वाले हैं	सबके सबकी	और लोगों की	और फ़रिश्तों की	अल्लाह की	लाअनत	उन पर है

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْهَا ۚ	لَا يُخَفَّفُ	عَنْهُمُ	الْعَذَابُ	وَلَا	هُمْ	يُنْظَرُوْنَ ﴿162﴾
उसमें	ना हल्का किया जाएगा	उनसे	अज़ाब	और ना	वो	वो मोहलत दिए जाऐंगे

وَاِلٰهُكُمْ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ ۚ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ	الرَّحْمٰنُ
और इलाह तुम्हारा	इलाह है	एक ही	नहीं	कोई इलाह (बर हक़)	मगर	वही	जो बहुत महरबान है

ع 19 11 3

الرَّحِيْمُ ﴿163﴾ ع	اِنَّ	فِيْ خَلْقِ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	وَاخْتِلَافِ	الَّيْلِ
निहायत रहम करने वाला है	बेशक	पैदा करने में	आसमानों	और ज़मीन के	और इख्तिलाफ़ में	रात

وَالنَّهَارِ	وَالْفُلْكِ	الَّتِيْ	تَجْرِيْ	فِي الْبَحْرِ	بِمَا	يَنْفَعُ
और दिन के	और कश्तियों में	वो जो	चलती है	समुन्दर में	साथ उसके जो	नफ़ा देता है

النَّاسَ	وَمَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	مِنَ السَّمَآءِ	مِنْ مَّآءٍ	فَاَحْيَا
लोगों को	और उसमें जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	आसमान से	पानी में से	फिर उसने ज़िंदा किया

بِهِ	الْاَرْضَ	بَعْدَ	مَوْتِهَا	وَبَثَّ	فِيْهَا	مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۖ
साथ उसके	ज़मीन को	बाद	उसकी मौत के	और उसने फैला दी	उसमें	हर क़िस्म की जानदार मख़्लूक़

وَّتَصْرِيْفِ	الرِّيٰحِ	وَالسَّحَابِ	الْمُسَخَّرِ	بَيْنَ	السَّمَآءِ
और फेरने में	हवाओं के	और बादलों में	जो मुसख़्ख़र किए गए हैं	दर्मियान	आसमान

وَالْاَرْضِ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يَّعْقِلُوْنَ ﴿164﴾	وَمِنَ النَّاسِ	مَنْ
और ज़मीन के	यक़ीनन निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो अक़्ल रखते हैं	और बाज़ लोग हैं	जो

يَّتَّخِذُ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	اَنْدَادًا	يُّحِبُّوْنَهُمْ	كَحُبِّ	اللّٰهِ ؕ
बना लेते हैं	सिवाए	अल्लाह के	कई शरीक	वो मुहब्बत करते हैं उनसे	जैसी मुहब्बत करना	अल्लाह से

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اَشَدُّ	حُبًّا	لِّلّٰهِ ؕ	وَلَوْ	يَرَى	الَّذِيْنَ
और वो जो	ईमान लाए	ज़्यादा शदीद हैं	मुहब्बत करने में	अल्लाह से	और काश	देख लें	वो जिन्होंने

ظَلَمُوْٓا	اِذْ	يَرَوْنَ	الْعَذَابَ ۙ	اَنَّ	الْقُوَّةَ	لِلّٰهِ	جَمِيْعًا ۙ	وَّ اَنَّ
ज़ुल्म किया	जब	वो देखेंगे	अज़ाब को	बेशक	क़ुव्वत	अल्लाह ही के लिए है	सारी की सारी	और बेशक

اللّٰهَ	شَدِيْدُ	الْعَذَابِ (165)	اِذْ	تَبَرَّاَ	الَّذِيْنَ	اتُّبِعُوْا	مِنَ الَّذِيْنَ
अल्लाह	सख़्त है	अज़ाब (देने में)	जब	बेज़ार होगें	वो जो	पैरवी किए गए	उनसे जिन्होंने

اتَّبَعُوْا	وَرَاَوُا	الْعَذَابَ	وَتَقَطَّعَتْ	بِهِمُ	الْاَسْبَابُ (166)	وَقَالَ
पैरवी की	और वो देख लेंगे	अज़ाब	और कट जाएंगे	उनके	तमाम असबाब	और कहेंगे

الَّذِيْنَ	اتَّبَعُوْا	لَوْ	اَنَّ	لَنَا	كَرَّةً	فَنَتَبَرَّاَ	مِنْهُمْ	كَمَا
वो जिन्होंने	पैरवी की	काश	कि	हमारे लिए होता	एक मर्तबा लौटना	तो हम बेज़ार होते	उनसे	जैसा कि

تَبَرَّءُوْا	مِنَّا ؕ	كَذٰلِكَ	يُرِيْهِمُ	اللّٰهُ	اَعْمَالَهُمْ	حَسَرٰتٍ
वो बेज़ार हुए	हमसे	इसी तरह	दिखाएगा उन्हें	अल्लाह	आमाल उनके	हसरतें बना कर

ع 20 4 4

عَلَيْهِمْ ؕ	وَمَا	هُمْ	بِخٰرِجِيْنَ	مِنَ النَّارِ (167) ع	يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ
उन पर	और नहीं	वो	निकलने वाले	आग से	ऐ लोगो

كُلُوْا	مِمَّا	فِى الْاَرْضِ	حَلٰلًا	طَيِّبًا ۖ	وَّلَا	تَتَّبِعُوْا	خُطُوٰتِ
खाओ	उससे जो	ज़मीन में है	हलाल	पाकीज़ा	और ना	तुम पैरवी करो	क़दमों की

الشَّيْطٰنِ ؕ	اِنَّهٗ	لَكُمْ	عَدُوٌّ	مُّبِيْنٌ (168)	اِنَّمَا	يَاْمُرُكُمْ	بِالسُّوْٓءِ
शैतान के	बेशक वो	तुम्हारे लिए	दुश्मन है	खुल्लम-खुल्ला	बेशक	वो हुक्म देता है तुम्हें	बुराई का

وَالْفَحْشَآءِ	وَاَنْ	تَقُوْلُوْا	عَلَى اللّٰهِ	مَا	لَا	تَعْلَمُوْنَ (169)	وَاِذَا
और बेहयाई का	और ये कि	तुम कहो	अल्लाह पर	जो	नहीं	तुम जानते	और जब

قِيْلَ	لَهُمُ	اتَّبِعُوْا	مَآ	اَنْزَلَ	اللّٰهُ	قَالُوْا	بَلْ	نَتَّبِعُ
कहा जाता है	उन्हें	पैरवी करो	उसकी जो	नाज़िल किया	अल्लाह ने	वो कहते हैं	बल्कि	हम पैरवी करेंगे

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَا يَعْقِلُوْنَ	اٰبَآؤُهُمْ	كَانَ	اَوَلَوْ	اٰبَآءَنَاؕ	عَلَيْهِ	اَلْفَيْنَا	مَآ
ना वो अक़्ल रखते	आबा ओ अजदाद उनके	हों	क्या भला अगरचे	अपने आबा ओ अजदाद को	जिस पर	पाया हमने	उसकी जो

كَمَثَلِ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	وَمَثَلُ	يَهْتَدُوْنَ (170)	وَّلَا	شَيْـًٔا
मानिंद मिसाल	कुफ़्र किया	उनकी जिन्होंने	और मिसाल	वो हिदायत याफ़्ता हों	और ना	कुछ भी

صُمٌّۢ	وَّنِدَآءًؕ	دُعَآءً	اِلَّا	لَا يَسْمَعُ	بِمَا	يَنْعِقُ	الَّذِیْ
बहरे	और आवाज़	पुकार	मगर	नहीं सुनता	उसे जो	चीख़ कर पुकारता है	उसके है जो

كُلُوْا	اٰمَنُوْا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	لَا يَعْقِلُوْنَ (171)	فَهُمْ	عُمْیٌ	بُكْمٌ
खाओ तुम	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	नहीं वो अक़्ल रखते	पस वो	अंधे हैं	गूंगे

كُنْتُمْ	اِنْ	لِلّٰهِ	وَاشْكُرُوْا	رَزَقْنٰكُمْ	مَا	مِنْ طَيِّبٰتِ
हो तुम	अगर	अल्लाह का	और शुक्र करो	अता कीं हमने तुम्हें	जो	पाकीज़ा चीज़ों में से

وَالدَّمَ	الْمَيْتَةَ	عَلَيْكُمُ	حَرَّمَ	اِنَّمَا	تَعْبُدُوْنَ (172)	اِيَّاهُ
और ख़ून	मुर्दार	तुम पर	उसने हराम किया है	बेशक	तुम इबादत करते	सिर्फ़ उसी की

اضْطُرَّ	فَمَنِ	اللّٰهِ ج	لِغَيْرِ	بِهٖ	اُهِلَّ	وَمَآ	الْخِنْزِيْرِ	وَلَحْمَ
मजबूर किया गया	तो जो कोई	अल्लाह के	वास्ते गैर	उसको	पुकारा गया	और जो	ख़िंज़ीर का	और गोश्त

غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَلَيْهِؕ	اِثْمَ	فَلَآ	عَادٍ	وَّلَا	بَاغٍ	غَيْرَ
बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह	बेशक	उस पर	कोई गुनाह	तो नहीं	हद से बढ़ने वाला हो	और ना	सरकशी करने वाला हो	ना

مِنَ الْكِتٰبِ	اللّٰهُ	اَنْزَلَ	مَآ	يَكْتُمُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	رَّحِيْمٌ (173)
किताब में से	अल्लाह ने	नाज़िल किया	उसे जो	छुपाते हैं	वो जो	बेशक	निहायत रहम करने वाला है

يَاْكُلُوْنَ	مَا	اُولٰٓئِكَ	قَلِيْلًاۙ	ثَمَنًا	بِهٖ	وَيَشْتَرُوْنَ
वो खाते	नहीं	यही लोग हैं	बहुत थोड़ी	क़ीमत	बदले उसके	और वो ले लेते हैं

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْ بُطُوْنِهِمْ	اِلَّا	النَّارَ	وَلَا	يُكَلِّمُهُمُ	اللّٰهُ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
अपने पेटों में	सिवाए	आग के	और नहीं	कलाम करेगा उनसे	अल्लाह	दिन	क़यामत के

وَلَا	يُزَكِّيْهِمْ ۚ	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿174﴾	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ
और ना	वो पाक करेगा उन्हें	और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	यही वो लोग हैं	जिन्होंने

اشْتَرَوُا	الضَّلٰلَةَ	بِالْهُدٰى	وَالْعَذَابَ	بِالْمَغْفِرَةِ ۚ	فَمَآ اَصْبَرَهُمْ
ख़रीद लिया	गुमराही को	बदले हिदायत के	और अज़ाब को	बदले मग़फ़िरत के	तो कितना सब्र है उनका

عَلَى النَّارِ ﴿175﴾	ذٰلِكَ	بِاَنَّ	اللّٰهَ	نَزَّلَ	الْكِتٰبَ	بِالْحَقِّ ؕ
आग पर	ये	बवजह उसके कि	अल्लाह ने	नाज़िल किया	किताब को	साथ हक़ के

ع 21 9 5

وَاِنَّ	الَّذِيْنَ	اخْتَلَفُوْا	فِي الْكِتٰبِ	لَفِيْ شِقَاقٍ	بَعِيْدٍ ﴿176﴾ ع	لَيْسَ
और बेशक	वो जिन्होंने	इख़्तिलाफ़ किया	किताब में	अलबत्ता मुख़ालफ़त में हैं	दूर की	नहीं है

الْبِرَّ	اَنْ	تُوَلُّوْا	وُجُوْهَكُمْ	قِبَلَ	الْمَشْرِقِ	وَالْمَغْرِبِ	وَلٰكِنَّ
नेकी	कि	तुम फेर लो	अपने चेहरों को	तरफ़	मशरिक़	और मग़रिब के	और लेकिन

الْبِرَّ	مَنْ	اٰمَنَ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	وَالْمَلٰٓئِكَةِ	وَالْكِتٰبِ
नेकी (उसकी है)	जो	ईमान लाए	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और फ़रिश्तों पर	और किताब पर

وَالنَّبِيّٖنَ ۚ	وَاٰتَى	الْمَالَ	عَلٰى حُبِّهٖ	ذَوِي الْقُرْبٰى	وَالْيَتٰمٰى
और नबियों पर	और वो दे	माल	उसकी मुहब्बत में	क़राबतदारों को	और यतीमों को

وَالْمَسٰكِيْنَ	وَابْنَ السَّبِيْلِ ۙ	وَالسَّآئِلِيْنَ	وَفِي الرِّقَابِ ۚ	وَاَقَامَ
और मिस्कीनों को	और मुसाफिरों को	और सवाल करने वालों को	और गर्दनें (छुड़ाने) में	और वो क़ायम करे

الصَّلٰوةَ	وَاٰتَى	الزَّكٰوةَ ۚ	وَالْمُوْفُوْنَ	بِعَهْدِهِمْ	اِذَا	عٰهَدُوْا ۚ
नमाज़	और वो अदा करे	ज़कात	और जो पूरा करने वाले हैं	अपने अहद को	जब	वो अहद करें

وَالصّٰبِرِيْنَ	فِى الْبَاْسَآءِ	وَالضَّرَّآءِ	وَحِيْنَ	الْبَاْسِ ؕ	اُولٰٓئِكَ
और जो सब्र करने वाले है	तंगदस्ती में	और तकलीफ़ में	और वक़्त	जंग के	यही वो लोग हैं

الَّذِيْنَ	صَدَقُوْا ؕ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُتَّقُوْنَ (177)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
जिन्होंने	सच कहा	और यही लोग हैं	वो	जो मुत्तक़ी हैं	ऐ लोगो जो

اٰمَنُوْا	كُتِبَ	عَلَيْكُمُ	الْقِصَاصُ	فِى الْقَتْلٰى ؕ	اَلْحُرُّ	بِالْحُرِّ
ईमान लाए हो	लिख दिया गया	तुम पर	बदला लेना	मक़्तूलों (के बारे) में	आज़ाद	बदले आज़ाद के

وَالْعَبْدُ	بِالْعَبْدِ	وَالْاُنْثٰى	بِالْاُنْثٰى ؕ	فَمَنْ	عُفِىَ	لَهٗ
और गुलाम	बदले गुलाम के	और औरत	बदले औरत के	तो जो कोई	माफ़ कर दिया गया	उसको

مِنْ اَخِيْهِ	شَىْءٌ	فَاتِّبَاعٌۢ	بِالْمَعْرُوْفِ	وَاَدَآءٌ	اِلَيْهِ
उसके भाई(की तरफ़) से	कुछ भी	तो पैरवी करना है	साथ भले तरीक़े के	और अदा करना है	तरफ़ उसके

بِاِحْسَانٍ ؕ	ذٰلِكَ	تَخْفِيْفٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	وَرَحْمَةٌ ؕ	فَمَنِ
साथ एहसान के	ये	तख़्फ़ीफ़/रिआयत है	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और रहमत है	तो जो कोई

اعْتَدٰى	بَعْدَ	ذٰلِكَ	فَلَهٗ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ (178)	وَلَكُمْ
ज़्यादती करे	बाद	उसके	तो उसके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और तुम्हारे लिए

فِى الْقِصَاصِ	حَيٰوةٌ	يّٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ	لَعَلَّكُمْ	تَتَّقُوْنَ (179)	كُتِبَ
बदला लेने में	ज़िंदगी है	ऐ अक़्ल वालो	ताकि तुम	तुम बच जाओ	लिख दिया गया

عَلَيْكُمْ	اِذَا	حَضَرَ	اَحَدَكُمُ	الْمَوْتُ	اِنْ	تَرَكَ	خَيْرًا ۖۚ
तुम पर	जब	आ जाए	तुम में से किसी एक को	मौत	अगर	वो छोड़ जाए	माल को

الْوَصِيَّةُ	لِلْوَالِدَيْنِ	وَالْاَقْرَبِيْنَ	بِالْمَعْرُوْفِ ۚ	حَقًّا	عَلَى
वसीअत करना	वालिदैन के लिए	और क़राबत दारों के लिए	भले तरीक़े से	ये हक़ है	ऊपर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِثْمُهٗ	فَاِنَّمَآ	سَمِعَهٗ	مَا	بَعْدَ	بَدَّلَهٗ	فَمَنْۢ	الْمُتَّقِيْنَ ؕ (180)
गुनाह उसका	तो बेशक	उसने सुना उसे	उसके जो	बाद	बदल दे उसे	तो जो कोई	मुत्तक़ी लोगों के

فَمَنْ	عَلِيْمٌ ؕ (181)	سَمِيْعٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	يُبَدِّلُوْنَهٗ ؕ	عَلَى الَّذِيْنَ
तो जो कोई	ख़ूब जानने वाला है	ख़ूब सुनने वाला है	अल्लाह	बेशक	बदल देते हैं उसे	उन पर है जो

فَلَآ	بَيْنَهُمْ	فَاَصْلَحَ	اِثْمًا	اَوْ	جَنَفًا	مِنْ مُّوْصٍ	خَافَ
तो नहीं	दर्मियान उनके	तो वो इस्लाह करादे	गुनाह का	या	तरफ़दारी का	वसीअत करने वाले से	खौफ़ करे

ع 22 6 6

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	رَّحِيْمٌ ع (182)	غَفُوْرٌ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَلَيْهِ ؕ	اِثْمَ
ऐ लोगो जो	निहायत रहम करने वाला है	बहुत बख़्शने वाला है	अल्लाह	बेशक	उस पर	कोई गुनाह

عَلَى الَّذِيْنَ	كُتِبَ	كَمَا	الصِّيَامُ	عَلَيْكُمُ	كُتِبَ	اٰمَنُوْا
उन पर जो	लिख दिया गया था	जैसा कि	रोज़ा रखना	तुम पर	लिख दिया गया	ईमान लाए हो

كَانَ	فَمَنْ	مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ	اَيَّامًا	تَتَّقُوْنَ ۙ (183)	لَعَلَّكُمْ	مِنْ قَبْلِكُمْ
हो	तो जो कोई	गिने-चुने	दिन हैं	मुत्तक़ी बन जाओ	ताकि तुम	तुमसे पहले थे

اُخَرَ ؕ	مِّنْ اَيَّامٍ	فَعِدَّةٌ	عَلٰى سَفَرٍ	اَوْ	مَّرِيْضًا	مِنْكُمْ
दूसरे	दिनों से	तो गिनती पूरी करना है	सफ़र पर	या	मरीज़	तुम में से

فَمَنْ	مِسْكِيْنٍ ؕ	طَعَامُ	فِدْيَةٌ	يُطِيْقُوْنَهٗ	وَعَلَى الَّذِيْنَ
फिर जो कोई	एक मिस्कीन का	खाना	फ़िदया है	ताक़त रखते हैं उसकी	और उन पर जो

خَيْرٌ	تَصُوْمُوْا	وَاَنْ	لَّهٗ ؕ	خَيْرٌ	فَهُوَ	خَيْرًا	تَطَوَّعَ
बेहतर है	तुम रोज़ा रखो	और ये कि	उसके लिए	बेहतर है	तो वो	कोई नेकी	ख़ुशी से करे

اُنْزِلَ	الَّذِيْۤ	رَمَضَانَ	شَهْرُ	تَعْلَمُوْنَ (184)	كُنْتُمْ	اِنْ	لَّكُمْ
नाज़िल किया गया	वो है जो	रमज़ान का	महीना	तुम इल्म रखते	हो तुम	अगर	तुम्हारे लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْهِ	الْقُرْاٰنُ	هُدًى	لِّلنَّاسِ	وَبَيِّنٰتٍ	مِّنَ الْهُدٰى	وَالْفُرْقَانِ ۚ
उसमें	क़ुरआन	हिदायत है	लोगों के लिए	और वाज़ेह निशानियां है	हिदायत की	और फ़ुरक़ान की

فَمَنْ	شَهِدَ	مِنْكُمُ	الشَّهْرَ	فَلْيَصُمْهُ ؕ	وَمَنْ	كَانَ
तो जो कोई	हाज़िर/मौजूद हो	तुम में से	इस महीने में	पस ज़रूर वो रोज़े रखे उसके	और जो कोई	हो

مَرِيْضًا	اَوْ	عَلٰى سَفَرٍ	فَعِدَّةٌ	مِّنْ اَيَّامٍ	اُخَرَ ؕ	يُرِيْدُ	اللّٰهُ
मरीज़	या	सफ़र पर	तो गिनती पूरी करना है	दिनों से	दूसरे	चाहता है	अल्लाह

بِكُمُ	الْيُسْرَ	وَلَا	يُرِيْدُ	بِكُمُ	الْعُسْرَ ۫	وَلِتُكْمِلُوا	الْعِدَّةَ
साथ तुम्हारे	आसानी	और नहीं	चाहता	साथ तुम्हारे	तंगी	और ताकि तुम मुकम्मल करो	गिनती को

وَلِتُكَبِّرُوا	اللّٰهَ	عَلٰى	مَا	هَدٰىكُمْ	وَلَعَلَّكُمْ	تَشْكُرُوْنَ (185)
और ताकि तुम बड़ाई बयान करो	अल्लाह की	ऊपर	उसके जो	उसने हिदायत दी तुम्हें	और ताकि तुम	तुम शुक्र अदा करो

وَاِذَا	سَاَلَكَ	عِبَادِيْ	عَنِّيْ	فَاِنِّيْ	قَرِيْبٌ ؕ	اُجِيْبُ
और जब	सवाल करें आपसे	मेरे बंदे	मेरे बारे में	तो बेशक मैं	क़रीब हूं	मैं जवाब देता हूं

دَعْوَةَ	الدَّاعِ	اِذَا	دَعَانِ ۙ	فَلْيَسْتَجِيْبُوْا	لِيْ	وَلْيُؤْمِنُوْا
दुआ का	दुआ करने वाले की	जब	वो दुआ करे मुझ से	पस ज़रूर वो हुक्म मानें	मेरा	और ज़रूर वो ईमान लाएं

بِيْ	لَعَلَّهُمْ	يَرْشُدُوْنَ (186)	اُحِلَّ	لَكُمْ	لَيْلَةَ	الصِّيَامِ
मुझ पर	ताकि वो	वो हिदायत पाएं	हलाल किया गया	तुम्हारे लिए	रात में	रोज़े की

الرَّفَثُ	اِلٰى	نِسَآئِكُمْ ؕ	هُنَّ	لِبَاسٌ	لَّكُمْ	وَاَنْتُمْ	لِبَاسٌ
रग़बत करना	तरफ़	अपनी औरतों के	वो	लिबास हैं	तुम्हारे लिए	और तुम	लिबास हो

لَّهُنَّ ؕ	عَلِمَ	اللّٰهُ	اَنَّكُمْ	كُنْتُمْ	تَخْتَانُوْنَ	اَنْفُسَكُمْ	فَتَابَ
उनके लिए	जान लिया	अल्लाह ने	बेशक तुम	थे तुम	तुम ख़्यानत करते	अपने नफ़्सों से	तो वो महरबान हुआ

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْكُمْ	وَعَفَا	عَنْكُمْ ۚ	فَالْـٰٔنَ	بَاشِرُوْهُنَّ	وَابْتَغُوْا	مَا
तुम पर	और उसने दरगुज़र किया	तुमसे	पस अब	मुबाशिरत करो उनसे	और तलाश करो	जो

كَتَبَ	اللّٰهُ	لَكُمْ ۖ	وَكُلُوْا	وَاشْرَبُوْا	حَتّٰى	يَتَبَيَّنَ	لَكُمُ
लिखा	अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	और खाओ	और पियो	यहां तक कि	वाज़ेह हो जाए	तुम्हारे लिए

الْخَيْطُ	الْاَبْيَضُ	مِنَ الْخَيْطِ الْاَسْوَدِ	مِنَ الْفَجْرِ ۖ	ثُمَّ	اَتِمُّوا
धागा	सफ़ेद	सियाह धागे से	फ़ज्र के (वक़्त)	फिर	तुम पूरा करो

الصِّيَامَ	اِلَى الَّيْلِ ۚ	وَلَا	تُبَاشِرُوْهُنَّ	وَاَنْتُمْ	عٰكِفُوْنَ ۙ
रोज़े को	रात तक	और ना	तुम मुबाशिरत करो उनसे	इस हाल में कि तुम	एतकाफ़ करने वाले हो

فِى الْمَسٰجِدِ ؕ	تِلْكَ	حُدُوْدُ	اللّٰهِ	فَلَا	تَقْرَبُوْهَا ؕ	كَذٰلِكَ
मस्जिदों में	ये	हुदूद हैं	अल्लाह की	तो ना	तुम क़रीब जाओ उनके	इसी तरह

يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	اٰيٰتِهٖ	لِلنَّاسِ	لَعَلَّهُمْ	يَتَّقُوْنَ ﴿187﴾	وَلَا	تَاْكُلُوْٓا
वाज़ेह करता है	अल्लाह	आयात अपनी	लोगों के लिए	ताकि वो	वो बच जाऐं	और ना	तुम खाओ

اَمْوَالَكُمْ	بَيْنَكُمْ	بِالْبَاطِلِ	وَتُدْلُوْا	بِهَآ	اِلَى الْحُكَّامِ
अपने मालों को	आपस में	बातिल(तरीक़े) से	और (ना) तुम पहुंचाओ	उन्हें	तरफ़ हाकिमों के

لِتَاْكُلُوْا	فَرِيْقًا	مِّنْ اَمْوَالِ	النَّاسِ	بِالْاِثْمِ	وَاَنْتُمْ	تَعْلَمُوْنَ ﴿188﴾ ع
ताकि तुम खाओ	एक हिस्सा	मालों में से	लोगों के	साथ गुनाह के	हालांकि तुम	तुम जानते हो

ع 23 6 7

يَسْـَٔلُوْنَكَ	عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ	قُلْ	هِىَ	مَوَاقِيْتُ	لِلنَّاسِ
वो सवाल करते हैं आपसे	नए चांदों के बारे में	कह दीजिए	वो	औक़ात मुक़र्ररह हैं	वास्ते लोगों के

وَالْحَجِّ ؕ	وَلَيْسَ	الْبِرُّ	بِاَنْ	تَاْتُوا	الْبُيُوْتَ	مِنْ ظُهُوْرِهَا
और हज के	और नहीं है	नेकी	ये कि	तुम आओ	घरों को	उनकी पिछली तरफ़ है

وَلٰكِنَّ	الْبِرَّ	مَنِ	اتَّقٰى ج	وَأْتُوا	الْبُيُوْتَ	مِنْ أَبْوَابِهَا ص
और लेकिन	नेकी (उसकी है)	जो	तक़वा करे	और आओ तुम	घरों को	उनके दरवाज़ों से

وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	لَعَلَّكُمْ	تُفْلِحُوْنَ (189)	وَقَاتِلُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
और डरो	अल्लाह से	ताकि तुम	तुम फ़लाह पा जाओ	और जंग करो	अल्लाह के रास्ते में

الَّذِيْنَ	يُقَاتِلُوْنَكُمْ	وَلَا	تَعْتَدُوْا ط	إِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ
उनसे जो	जंग करते हैं तुमसे	और ना	तुम ज़्यादती करो	बेशक	अल्लाह	नहीं पसंद करता

الْمُعْتَدِيْنَ (190)	وَاقْتُلُوْهُمْ	حَيْثُ	ثَقِفْتُمُوْهُمْ	وَأَخْرِجُوْهُمْ
ज़्यादती करने वालों को	और क़त्ल करो उन्हें	जहां भी	पाओ तुम उन्हें	और निकालो उन्हें

مِّنْ حَيْثُ	أَخْرَجُوْكُمْ	وَالْفِتْنَةُ	أَشَدُّ	مِنَ الْقَتْلِ ج	وَلَا
जहां से	उन्होंने निकाला तुम्हें	और फ़ितना	ज़्यादा सख़्त है	क़त्ल से	और ना

تُقٰتِلُوْهُمْ	عِنْدَ	الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ	حَتّٰى	يُقٰتِلُوْكُمْ	فِيْهِ ج	فَإِنْ
तुम लड़ो उनसे	पास	मस्जिदे	हराम के	यहां तक कि	वो लड़ें तुमसे	उसमें	फिर अगर

قٰتَلُوْكُمْ	فَاقْتُلُوْهُمْ ط	كَذٰلِكَ	جَزَآءُ	الْكٰفِرِيْنَ (191)	فَإِنِ	انْتَهَوْا
वो लड़ें तुमसे	तो क़त्ल करो उन्हें	यही है	बदला	काफ़िरों का	फिर अगर	वो बाज़ आ जाएं

فَإِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (192)	وَقٰتِلُوْهُمْ	حَتّٰى	لَا	تَكُوْنَ
तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	बहुत रहम करने वाला है	और लड़ो उनसे	यहां तक कि	ना	रहे

فِتْنَةٌ	وَّيَكُوْنَ	الدِّيْنُ	لِلّٰهِ ط	فَإِنِ	انْتَهَوْا	فَلَا	عُدْوَانَ
कोई फ़ितना	और हो जाए	दीन	अल्लाह ही के लिए	फ़िर अगर	वो बाज़ आ जाएं	तो नहीं	कोई ज़्यादती

إِلَّا	عَلَى الظّٰلِمِيْنَ (193)	اَلشَّهْرُ	الْحَرَامُ	بِالشَّهْرِ	الْحَرَامِ	وَالْحُرُمٰتُ
मगर	ज़ालिमों पर	माहे	हराम	बदले माहे	हराम के	और हुरमतों का

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قِصَاصٌ ؕ	فَمَنِ	اعْتَدٰى	عَلَيْكُمْ	فَاعْتَدُوْا	عَلَيْهِ	بِمِثْلِ	مَا
बदला है	तो जो कोई	ज़्यादती करे	तुम पर	तो ज़्यादती करो	उस पर	उसी तरह	जैसे

اعْتَدٰى	عَلَيْكُمْ ۛ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	مَعَ
उसने ज़्यादती की	तुम पर	और डरो	अल्लाह से	और जान लो	बेशक	अल्लाह	साथ है

الْمُتَّقِيْنَ (194)	وَاَنْفِقُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَلَا	تُلْقُوْا	بِاَيْدِيْكُمْ
मुत्तक़ी लोगों के	और खर्च करो	अल्लाह के रास्ते में	और ना	तुम डालो	अपने हाथों को

ع

اِلَى التَّهْلُكَةِ ۛ	وَاَحْسِنُوْا ۚ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُحْسِنِيْنَ (195)
तरफ़ हलाकत के	और एहसान करो	बेशक	अल्लाह	मुहब्बत रखता है	एहसान करने वालों से

وَاَتِمُّوا	الْحَجَّ	وَالْعُمْرَةَ	لِلّٰهِ ؕ	فَاِنْ	اُحْصِرْتُمْ	فَمَا
और पूरा करो	हज	और उमरा को	अल्लाह के लिए	फिर अगर	घेर लिए जाओ तुम	तो जो

اسْتَيْسَرَ	مِنَ الْهَدْيِ ۚ	وَلَا	تَحْلِقُوْا	رُءُوْسَكُمْ	حَتّٰى	يَبْلُغَ
मयस्सर आए	क़ुर्बानी से (वो करलो)	और ना	तुम मुंडवाओ	अपने सरों को	यहां तक कि	पहुंच जाए

الْهَدْيُ	مَحِلَّهٗ ؕ	فَمَنْ	كَانَ	مِنْكُمْ	مَّرِيْضًا	اَوْ	بِهٖٓ
क़ुर्बानी	अपनी हलालगाह को	तो जो कोई	हो	तुम में से	मरीज़	या	उसे

اَذًى	مِّنْ رَّاْسِهٖ	فَفِدْيَةٌ	مِّنْ صِيَامٍ	اَوْ	صَدَقَةٍ	اَوْ
तकलीफ़ हो	उसके सर में	तो फ़िदया देना है	रोज़ों से	या	सदक़े से	या

نُسُكٍ ۚ	فَاِذَآ	اَمِنْتُمْ وقفة	فَمَنْ	تَمَتَّعَ	بِالْعُمْرَةِ	اِلَى الْحَجِّ
क़ुर्बानी से	पस जब	अमन में आ जाओ तुम	तो जो कोई	फ़ायदा उठाए	साथ उमरा के	हज तक

فَمَا	اسْتَيْسَرَ	مِنَ الْهَدْيِ ۚ	فَمَنْ	لَّمْ	يَجِدْ	فَصِيَامُ
तो जो भी	मयस्सर हो	क़ुर्बानी से (वो करले)	फिर जो कोई	ना	पाए	तो रोज़े रखना है

ثَلٰثَةِ	اَيَّامٍ	فِي الْحَجِّ	وَسَبْعَةٍ	اِذَا	رَجَعْتُمْ ؕ	تِلْكَ
तीन	दिनों के	हज में	और सात	जब	लौटो तुम	ये

عَشَرَةٌ	كَامِلَةٌ ؕ	ذٰلِكَ	لِمَنْ	لَّمْ	يَكُنْ	اَهْلُهٗ	حَاضِرِي
दस हैं	पूरे	ये	उसके लिए जो	ना	हों	उसके अहले ख़ाना	(पास) रहने वाले

الْمَسْجِدِ	الْحَرَامِ ؕ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	شَدِيْدُ
मस्जिदे	हराम के	और डरो	अल्लाह से	और जान लो	बेशक	अल्लाह	सख़्त

ع 24 8 8

الْعِقَابِ ﴿196﴾ ع	اَلْحَجُّ	اَشْهُرٌ	مَّعْلُوْمٰتٌ ۚ	فَمَنْ	فَرَضَ	فِيْهِنَّ
सज़ा वाला है	हज(के)	महीने	मालूम हैं	तो जो कोई	फ़र्ज़ कर ले	उनमें

الْحَجَّ	فَلَا	رَفَثَ	وَلَا	فُسُوْقَ ۙ	وَلَا	جِدَالَ	فِي الْحَجِّ ؕ
हज को	तो ना	जिंसी गुफ्तगू करना	और ना	गुनाह करना	और ना	झगड़ा करना है	हज में

وقف النبي صلى الله عليه وسلم

وَمَا	تَفْعَلُوْا	مِنْ خَيْرٍ	يَّعْلَمْهُ	اللّٰهُ ؔ	وَتَزَوَّدُوْا	فَاِنَّ
और जो भी	तुम करोगे	कोई नेकी	जान लेगा उसे	अल्लाह	और तुम ज़ादे राह ले लिया करो	पस बेशक

خَيْرَ	الزَّادِ	التَّقْوٰى ز	وَاتَّقُوْنِ	يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿197﴾	لَيْسَ
बेहतरीन	ज़ादेराह	तक़्वा है	और डरो मुझसे	ऐ अक़्ल वालो	नहीं है

عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	اَنْ	تَبْتَغُوْا	فَضْلًا	مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ	فَاِذَآ
तुम पर	कोई गुनाह	कि	तुम तलाश करो	फ़ज़्ल	अपने रब की तरफ़ से	फिर जब

اَفَضْتُمْ	مِّنْ عَرَفٰتٍ	فَاذْكُرُوا	اللّٰهَ	عِنْدَ	الْمَشْعَرِ	الْحَرَامِ ۖ
पलटो तुम	अरफ़ात से	तो ज़िक्र करो	अल्लाह का	पास	मशअरे	हराम के

وَاذْكُرُوْهُ	كَمَا	هَدٰىكُمْ ۚ	وَاِنْ	كُنْتُمْ	مِّنْ قَبْلِهٖ
और ज़िक्र करो उसका	जैसा कि	उसने रहनुमाई की तुम्हारी	और बेशक	थे तुम	इससे क़ब्ल

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿198﴾	ثُمَّ	اَفِيْضُوْا	مِنْ حَيْثُ	اَفَاضَ	النَّاسُ
अलबत्ता गुमराहों में से	फिर	तुम पलटो	जहां से	पलटते हैं	लोग

وَاسْتَغْفِرُوا	اللّٰهَ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿199﴾	فَاِذَا
और बख़्शिश मांगो	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	फिर जब

قَضَيْتُمْ	مَّنَاسِكَكُمْ	فَاذْكُرُوا	اللّٰهَ	كَذِكْرِكُمْ	اٰبَآءَكُمْ
पूरे कर चुको तुम	अपने मनासिके हज	तो ज़िक्र करो	अल्लाह का	जैसा कि ज़िक्र करना है तुम्हारा	अपने आबा ओ अजदाद का

اَوْ	اَشَدَّ	ذِكْرًا ط	فَمِنَ النَّاسِ	مَنْ	يَّقُوْلُ	رَبَّنَآ	اٰتِنَا
या	ज़्यादा शदीद	ज़िक्र करना	पस लोगों में से कोई है	जो	कहता है	ऐ हमारे रब	दे हमें

فِي الدُّنْيَا	وَمَا	لَهٗ	فِي الْاٰخِرَةِ	مِنْ خَلَاقٍ ﴿200﴾	وَمِنْهُمْ
दुनिया में	और नहीं है	उसके लिए	आख़िरत में	कोई हिस्सा	और उनमें से कोई है

مَّنْ	يَّقُوْلُ	رَبَّنَآ	اٰتِنَا	فِي الدُّنْيَا	حَسَنَةً	وَّفِي الْاٰخِرَةِ
जो	कहता है	ऐ हमारे रब	दे हमें	दुनिया में	भलाई	और आख़िरत में

النصف

حَسَنَةً	وَّقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ ﴿201﴾	اُولٰٓئِكَ	لَهُمْ	نَصِيْبٌ
भलाई	और बचा हमें	अज़ाब से	आग के	यही लोग हैं	जिनके लिए	एक हिस्सा है

مِّمَّا	كَسَبُوْا ط	وَاللّٰهُ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ﴿202﴾	وَاذْكُرُوا	اللّٰهَ
उससे जो	उन्होंने कमाया	और अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब	और याद करो	अल्लाह को

فِيْٓ اَيَّامٍ	مَّعْدُوْدٰتٍ ط	فَمَنْ	تَعَجَّلَ	فِيْ يَوْمَيْنِ	فَلَآ	اِثْمَ
दिनों में	गिने-चुने	तो जो कोई	जल्दी करे	दो दिनों में	तो नहीं	कोई गुनाह

عَلَيْهِ ج	وَمَنْ	تَاَخَّرَ	فَلَآ	اِثْمَ	عَلَيْهِ لا	لِمَنِ	اتَّقٰى ط
उस पर	और जो कोई	ताख़ीर करे	तो नहीं	कोई गुनाह	उस पर	उसके लिए जो	तक़वा करे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمِنَ النَّاسِ	تُحْشَرُوْنَ (203)	اِلَيْهِ	اَنَّكُمْ	وَاعْلَمُوْٓا	اللّٰهَ	وَاتَّقُوا
और लोगों में से कोई है	तुम इकट्ठे किए जाओगे	तरफ़ उसी के	बेशक तुम	और जान लो	अल्लाह से	और डरो

عَلٰى	اللّٰهَ	وَيُشْهِدُ	الدُّنْيَا	فِي الْحَيٰوةِ	قَوْلُهٗ	يُّعْجِبُكَ	مَنْ
ऊपर	अल्लाह को	और वो गवाह बनाता है	दुनिया की	ज़िंदगी में	बात उसकी	ख़ुश करती है आपको	जो

تَوَلّٰى	وَاِذَا	الْخِصَامِ (204)	اَلَدُّ	وَهُوَ	فِيْ قَلْبِهٖ ۙ	مَا
वो मुंह मोड़ता है	और जब	झगड़ा करने में	सख़्त झगड़ालू है	हालांकि वो	उसके दिल में है	उसके जो

وَالنَّسْلَ ؕ	الْحَرْثَ	وَيُهْلِكَ	فِيْهَا	لِيُفْسِدَ	فِي الْاَرْضِ	سَعٰى
और नस्ल को	खेती	और वो हलाक करे	उसमें	ताकि वो फ़साद करे	ज़मीन में	वो कोशिश करता है

اللّٰهَ	اتَّقِ	لَهُ	قِيْلَ	وَاِذَا	الْفَسَادَ (205)	لَا يُحِبُّ	وَاللّٰهُ
अल्लाह से	डरो	उसे	कहा जाता है	और जब	फ़साद को	नहीं वो पसंद करता	और अल्लाह

الْمِهَادُ (206)	وَلَبِئْسَ	جَهَنَّمُ ؕ	فَحَسْبُهٗ	بِالْاِثْمِ	الْعِزَّةُ	اَخَذَتْهُ
ठिकाना	और अलबत्ता कितना बुरा है	जहन्नम	तो काफ़ी है उसे	गुनाह पर	इज़्ज़त	आमादा करती है उसे

اللّٰهِ ؕ	مَرْضَاتِ	ابْتِغَآءَ	نَفْسَهُ	يَّشْرِيْ	مَنْ	وَمِنَ النَّاسِ
अल्लाह की	रज़ा	चाहने के लिए	अपने नफ़्स को	बेचता है	जो	और लोगों में से कोई है

ادْخُلُوْا	اٰمَنُوا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	بِالْعِبَادِ (207)	رَءُوْفٌۢ	وَاللّٰهُ
दाख़िल हो जाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बंदों पर	बहुत शफ़ीक़ है	और अल्लाह

اِنَّهٗ	الشَّيْطٰنِ ؕ	خُطُوٰتِ	تَتَّبِعُوْا	وَلَا	كَآفَّةً ۪	فِي السِّلْمِ
बेशक वो	शैतान के	क़दमों की	तुम पैरवी करो	और ना	पूरे के पूरे	इस्लाम में

جَآءَتْكُمُ	مَا	مِّنْۢ بَعْدِ	زَلَلْتُمْ	فَاِنْ	مُّبِيْنٌ (208)	عَدُوٌّ	لَكُمْ
आ गई तुम्हारे पास	जो	बाद इसके	फ़िसल जाओ तुम	फिर अगर	खुल्लम-खुल्ला	दुश्मन है	तुम्हारा

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْبَيِّنٰتُ	فَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ ﴿209﴾	هَلْ	يَنْظُرُوْنَ
वाज़ेह निशानियां	तो जान लो	बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	नहीं	वो इंतिज़ार कर रहे

اِلَّآ	اَنْ	يَّاْتِيَهُمُ	اللّٰهُ	فِيْ ظُلَلٍ	مِّنَ الْغَمَامِ	وَالْمَلٰٓئِكَةُ
मगर	ये कि	आ जाए उनके पास	अल्लाह	सायबानों में	बादलों के	और फ़रिश्ते

ع 25 14 9

وَقُضِيَ	الْاَمْرُ ؕ	وَاِلَى	اللّٰهِ	تُرْجَعُ	الْاُمُوْرُ ﴿210﴾ ع	سَلْ
और पूरा कर दिया जाए	काम	और तरफ़	अल्लाह ही के	लौटाए जाते हैं	सब काम	पूछ लीजिए

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	كَمْ	اٰتَيْنٰهُمْ	مِّنْ اٰيَةٍ	بَيِّنَةٍ ؕ	وَمَنْ
बनी इस्राईल से	कितनी	दीं हमने उन्हें	निशानियां	वाज़ेह	और जो कोई

يُّبَدِّلْ	نِعْمَةَ	اللّٰهِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَتْهُ	فَاِنَّ	اللّٰهَ
बदल देगा	नेअमत को	अल्लाह की	बाद इसके	जो	आ गई उसके पास	तो बेशक	अल्लाह

شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ﴿211﴾	زُيِّنَ	لِلَّذِيْنَ	كَفَرُوا	الْحَيٰوةُ	الدُّنْيَا
सख़्त	सज़ा वाला है	मुज़य्यन कर दी गई	उनके लिए जिन्होंने	कुफ़्र किया	ज़िंदगी	दुनिया कि

وقف لازم

وَيَسْخَرُوْنَ	مِنَ الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ۘ	وَالَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	فَوْقَهُمْ
और वो मज़ाक़ करते हैं	उनसे जो	ईमान लाए	और वो जिन्होंने	तक़वा किया	ऊपर होंगे उनके

يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	وَاللّٰهُ	يَرْزُقُ	مَنْ	يَّشَآءُ	بِغَيْرِ	حِسَابٍ ﴿212﴾
दिन	क़यामत के	और अल्लाह	रिज़्क़ देता है	जिसे	वो चाहता है	बगैर	हिसाब के

كَانَ	النَّاسُ	اُمَّةً	وَّاحِدَةً ۟ قف	فَبَعَثَ	اللّٰهُ	النَّبِيّٖنَ	مُبَشِّرِيْنَ
थे	लोग	उम्मत	एक ही	फिर भेजा	अल्लाह ने	नबियों को	ख़ुशख़बरी देने वाले

وَمُنْذِرِيْنَ ۪	وَاَنْزَلَ	مَعَهُمُ	الْكِتٰبَ	بِالْحَقِّ	لِيَحْكُمَ	بَيْنَ
और डराने वाले(बना कर)	और उसने नाज़िल की	उनके साथ	किताब	साथ हक़ के	ताकि वो फ़ैसला करे	दर्मियान

النَّاسِ	فِيْمَا	اخْتَلَفُوْا	فِيْهِ ط	وَمَا	اخْتَلَفَ	فِيْهِ	اِلَّا
लोगों के	उसमें जो	उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	जिसमें	और नहीं	इख़्तिलाफ़ किया	उसमें	मगर

الَّذِيْنَ	اُوْتُوْهُ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	جَآءَتْهُمُ	الْبَيِّنٰتُ	بَغْيًۢا
उन्होंने जो	दिए गए थे उसे	बाद उसके	जो	आईं उनके पास	वाज़ेह निशानियां	बवजह ज़िद के

بَيْنَهُمْ ج	فَهَدَى	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لِمَا	اخْتَلَفُوْا
आपस में	तो हिदायत दी	अल्लाह ने	उन्हें जो	ईमान लाए	उसकी जो	उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया

فِيْهِ	مِنَ الْحَقِّ	بِاِذْنِهٖ ط	وَاللّٰهُ	يَهْدِيْ	مَنْ	يَّشَآءُ	اِلٰى
उसमें	हक़ में से	अपने हुक्म से	और अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	तरफ़

صِرَاطٍ	مُّسْتَقِيْمٍ (213)	اَمْ	حَسِبْتُمْ	اَنْ	تَدْخُلُوا	الْجَنَّةَ	وَلَمَّا
रास्ते	सीधे के	क्या	ख़्याल किया तुमने	कि	तुम दाख़िल हो जाओगे	जन्नत में	हालांकि नहीं

يَاْتِكُمْ	مَّثَلُ	الَّذِيْنَ	خَلَوْا	مِنْ قَبْلِكُمْ ط	مَسَّتْهُمُ	الْبَاْسَآءُ
आई तुम्हारे पास	मिसाल	उनकी जो	गुज़र चुके	तुमसे पहले	पहुंची उन्हें	सख़्तियां

وَالضَّرَّآءُ	وَزُلْزِلُوْا	حَتّٰى	يَقُوْلَ	الرَّسُوْلُ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
और मुसीबतें	और वो हिला दिए गए	यहां तक कि	कहने लगा	रसूल	और वो जो	ईमान लाए

مَعَهٗ	مَتٰى	نَصْرُ	اللّٰهِ ط	اَلَآ	اِنَّ	نَصْرَ	اللّٰهِ	قَرِيْبٌ (214)
साथ उसके	कब(आएगी)	मदद	अल्लाह की	ख़बरदार	बेशक	मदद	अल्लाह की	क़रीब है

يَسْـَٔلُوْنَكَ	مَاذَا	يُنْفِقُوْنَ ؕ	قُلْ	مَآ	اَنْفَقْتُمْ	مِّنْ خَيْرٍ
वो सवाल करते हैं आपसे	क्या कुछ	वो खर्च करें	कह दीजिए	जो	खर्च करो तुम	माल में से

فَلِلْوَالِدَيْنِ	وَالْاَقْرَبِيْنَ	وَالْيَتٰمٰى	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَابْنِ السَّبِيْلِ ط
तो वालिदैन के लिए है	और क़राबतदारों	और यतीमों	और मिस्कीनों	और मुसाफ़िर के लिए है

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كُتِبَ	عَلِيْمٌ (215)	بِهٖ	اللّٰهَ	فَاِنَّ	مِنْ خَيْرٍ	تَفْعَلُوْا	وَمَا
लिख दिया गया	ख़ूब जानने वाला है	उसे	अल्लाह	तो बेशक	नेकी में से	तुम करोगे	और जो भी

تَكْرَهُوْا	اَنْ	وَعَسٰٓى	لَّكُمْ ج	كُرْهٌ	وَهُوَ	الْقِتَالُ	عَلَيْكُمُ
तुम नापसंद करो	कि	और हो सकता है	तुम्हारे लिए	नापसंदीदा है	और वो	जंग करना	तुम पर

شَيْـًٔا	تُحِبُّوْا	اَنْ	وَعَسٰٓى	لَّكُمْ ج	خَيْرٌ	وَّهُوَ	شَيْـًٔا
किसी चीज़ को	तुम पसंद करो	कि	और हो सकता है	तुम्हारे लिए	बेहतर हो	और वो	किसी चीज़ को

26 ع 6 10

لَا تَعْلَمُوْنَ ع (216)	وَاَنْتُمْ	يَعْلَمُ	وَاللّٰهُ	لَّكُمْ ط	شَرٌّ	وَّهُوَ
नहीं तुम जानते	और तुम	जानता है	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	बुरी हो	और वो

قِتَالٌ	قُلْ	فِيْهِ ط	قِتَالٍ	عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ	يَسْـَٔلُوْنَكَ
जंग करना	कह दीजिए	उसमें (कैसा है)	जंग करना	हराम महीने के बारे में	वो सवाल करते हैं आपसे

بِهٖ	وَكُفْرٌۢ	عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَصَدٌّ	كَبِيْرٌ ط	فِيْهِ
उसका	और कुफ़्र करना	अल्लाह के रास्ते से	और रोकना	बड़ा (गुनाह है)	उसमें

عِنْدَ اللّٰهِ ج	اَكْبَرُ	مِنْهُ	اَهْلِهٖ	وَاِخْرَاجُ	وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ق
अल्लाह के नज़दीक	ज़्यादा बड़ा(गुनाह) है	उससे	उसके रहने वालों को	और निकालना	और (रोकना) मस्जिदे हराम से

حَتّٰى	يُقَاتِلُوْنَكُمْ	وَلَا يَزَالُوْنَ	مِنَ الْقَتْلِ ط	اَكْبَرُ	وَالْفِتْنَةُ
यहां तक कि	जंग करते तुमसे	और वो हमेशा रहेंगे	क़त्ल से	ज़्यादा बड़ा है	और फ़ितना

مِنْكُمْ	يَّرْتَدِدْ	وَمَنْ	اسْتَطَاعُوْا ط	اِنِ	عَنْ دِيْنِكُمْ	يَرُدُّوْكُمْ
तुममें से	फिर जाए	और जो कोई	वो इस्तिताअत रखें	अगर	तुम्हारे दीन से	वो फेर दें तुम्हें

اَعْمَالُهُمْ	حَبِطَتْ	فَاُولٰٓئِكَ	كَافِرٌ	وَهُوَ	فَيَمُتْ	عَنْ دِيْنِهٖ
आमाल उनके	ज़ाया हो गए	तो यही लोग हैं	काफ़िर हो	इस हाल में कि वो	फिर वो मर जाए	अपने दीन से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ج	وَاُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ	النَّارِ ج	هُمْ	فِيْهَا
दुनिया में	और आख़िरत में	और यही लोग है	साथी	आग के	वो	उसमें

خٰلِدُوْنَ (217)	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ	هَاجَرُوْا	وَجٰهَدُوْا
हमेशा रहने वाले है	बेशक	वो जो	ईमान लाए	और वो जिन्होंने	हिजरत की	और जिहाद किया

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لا	اُولٰٓئِكَ	يَرْجُوْنَ	رَحْمَتَ اللّٰهِ ط	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
अल्लाह के रास्ते में	यही लोग हैं	जो उम्मीद रखते हैं	अल्लाह की रेहमत की	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

رَّحِيْمٌ (218)	يَسْئَلُوْنَكَ	عَنِ الْخَمْرِ	وَالْمَيْسِرِ ط	قُلْ	فِيْهِمَآ
निहायत रहम करने वाला है	वो सवाल करते हैं आपसे	शराब(नशे) के बारे में	और जुवे के	कह दीजिए	उन दोनों में

اِثْمٌ	كَبِيْرٌ	وَّمَنَافِعُ	لِلنَّاسِ ز	وَاِثْمُهُمَآ	اَكْبَرُ	مِنْ نَّفْعِهِمَا ط
गुनाह है	बहुत बड़ा	और कुछ फ़ायदे हैं	लोगों के लिए	और गुनाह उन दोनों का	ज़्यादा बड़ा है	उन दोनों के फ़ायदे से

وَيَسْئَلُوْنَكَ	مَاذَا	يُنْفِقُوْنَ ۵	قُلِ	الْعَفْوَ ط	كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ
और वो सवाल करते हैं आपसे	क्या कुछ	वो ख़र्च करें	कह दीजिए	ज़रूरत से ज़्यादा हो	इसी तरह	वाज़ेह करता है

اللّٰهُ	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّكُمْ	تَتَفَكَّرُوْنَ (219)	فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ط
अल्लाह	तुम्हारे लिए	आयात	ताकि तुम	तुम ग़ौरो फ़िक्र करो	दुनिया में	और आख़िरत में

وَيَسْئَلُوْنَكَ	عَنِ الْيَتٰمٰى ط	قُلْ	اِصْلَاحٌ	لَّهُمْ	خَيْرٌ ط	وَاِنْ
और वो सवाल करते हैं आपसे	यतीमों के बारे में	कह दीजिए	इस्लाह करना	उनकी	बेहतर है	और अगर

تُخَالِطُوْهُمْ	فَاِخْوَانُكُمْ ط	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	الْمُفْسِدَ	مِنَ الْمُصْلِحِ ط
तुम मिला लो उन्हें	तो वो भाई हैं तुम्हारे	और अल्लाह	जानता है	फ़साद करने वाले को	इस्लाह करने वाले से

وَلَوْ	شَآءَ	اللّٰهُ	لَاَعْنَتَكُمْ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ (220)
और अगर	चाहता	अल्लाह	अलबत्ता वो मुश्किल में डाल देता तुम्हें	बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है

© AL HIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	تَنْكِحُوا	الْمُشْرِكٰتِ	حَتّٰى	يُؤْمِنَّ ط	وَلَاَمَةٌ	مُّؤْمِنَةٌ
और ना	तुम निकाह करो	मुशरिका औरतों से	यहां तक कि	वो ईमान ले आऐं	और अलबत्ता लौंडी	मोमिना

خَيْرٌ	مِّنْ مُّشْرِكَةٍ	وَّلَوْ	اَعْجَبَتْكُمْ ج	وَلَا	تُنْكِحُوا	الْمُشْرِكِيْنَ
बेहतर है	मुशरिका औरत से	और अगरचे	वो अच्छी लगे तुम्हें	और ना	तुम निकाह करके दो	मुशरिक मर्दों को

حَتّٰى	يُؤْمِنُوْا ط	وَلَعَبْدٌ	مُّؤْمِنٌ	خَيْرٌ	مِّنْ مُّشْرِكٍ	وَّلَوْ
यहां तक कि	वो ईमान ले आऐं	और अलबत्ता गुलाम	मोमिन	बेहतर है	मुशरिक मर्द से	और अगरचे

اَعْجَبَكُمْ ط	اُولٰٓئِكَ	يَدْعُوْنَ	اِلَى النَّارِ صلے ج	وَاللّٰهُ	يَدْعُوْٓا	اِلَى الْجَنَّةِ
वो अच्छा लगे तुम्हें	यही लोग हैं	जो बुलाते हैं	तरफ़ आग के	और अल्लाह	बुलाता है	तरफ़ जन्नत के

وَالْمَغْفِرَةِ	بِاِذْنِهٖ ج	وَيُبَيِّنُ	اٰيٰتِهٖ	لِلنَّاسِ	لَعَلَّهُمْ
और बख़्शिश के	अपने इज़्न से	और वो वाज़ेह करता है	आयात अपनी	लोगों के लिए	ताकि वो

27 ع 5 11

يَتَذَكَّرُوْنَ (221) ع	وَيَسْـَٔلُوْنَكَ	عَنِ الْمَحِيْضِ ط	قُلْ	هُوَ	اَذًى لا
वो नसीहत पकड़ें	और वो सवाल करते हैं आपसे	हैज़ के बारे में	कह दीजिए	वो	अज़ियत है

فَاعْتَزِلُوا	النِّسَآءَ	فِي الْمَحِيْضِ لا	وَلَا	تَقْرَبُوْهُنَّ	حَتّٰى	يَطْهُرْنَ ج
तो अलग रहो	औरतों से	हैज़ में	और ना	तुम क़रीब जाओ उनके	यहां तक कि	वो पाक हो जाऐं

فَاِذَا	تَطَهَّرْنَ	فَاْتُوْهُنَّ	مِنْ حَيْثُ	اَمَرَكُمُ	اللّٰهُ ط	اِنَّ
फिर जब	वो अच्छी तरह पाक हो जाऐं	तो आओ उनके पास	जहां से	हुक्म दिया तुम्हें	अल्लाह ने	बेशक

اللّٰهَ	يُحِبُّ	التَّوَّابِيْنَ	وَيُحِبُّ	الْمُتَطَهِّرِيْنَ (222)	نِسَآؤُكُمْ	حَرْثٌ
अल्लाह	मुहब्बत रखता है	बहुत तौबा करने वालों से	और वो मुहब्बत रखता है	पाक साफ़ रहने वालों से	औरतें तुम्हारी	खेती हैं

لَّكُمْ ص	فَاْتُوْا	حَرْثَكُمْ	اَنّٰى	شِئْتُمْ ز	وَقَدِّمُوْا	لِاَنْفُسِكُمْ ط
तुम्हारे लिए	तो आओ	अपनी खेती में	जिस तरह	चाहो तुम	और आगे भेजो	अपने नफ़्सों के लिए

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّكُمْ	مُّلٰقُوْهُ ؕ	وَبَشِّرِ
और डरो	अल्लाह से	और जान लो	बेशक तुम	मुलाक़ात करने वाले हो उससे	और ख़ुशख़बरी दे दीजिए

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿223﴾	وَلَا	تَجْعَلُوا	اللّٰهَ	عُرْضَةً	لِّاَيْمَانِكُمْ	اَنْ
ईमान लाने वालों को	और ना	तुम बनाओ	अल्लाह को	आड़	अपनी क़समों के लिए	कि

تَبَرُّوْا	وَتَتَّقُوْا	وَتُصْلِحُوْا	بَيْنَ	النَّاسِ ؕ	وَاللّٰهُ	سَمِيْعٌ
(ना)तुम नेकी करोगे	और(ना) तुम तक़वा करोगे	और (ना) तुम सुलह कराओगे	दर्मियान	लोगों के	और अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है

عَلِيْمٌ ﴿224﴾	لَا يُؤَاخِذُكُمُ	اللّٰهُ	بِاللَّغْوِ	فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ	وَلٰكِنْ
ख़ूब जानने वाला है	नहीं मुआख़िज़ा करेगा तुम्हारा	अल्लाह	साथ लग़ाव के	तुम्हारी क़समों में	और लेकिन

يُّؤَاخِذُكُمْ	بِمَا	كَسَبَتْ	قُلُوْبُكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ
वो मुआख़िज़ा करेगा तुम्हारा	बवजह उसके जो	कमाया	तुम्हारे दिलों ने	और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

حَلِيْمٌ ﴿225﴾	لِلَّذِيْنَ	يُؤْلُوْنَ	مِنْ نِّسَآئِهِمْ	تَرَبُّصُ	اَرْبَعَةِ
बहुत हिल्म वाला है	उन लोगों के लिए जो	इला करते हैं	अपनी औरतों से	इंतिज़ार करना है	चार

اَشْهُرٍ ۚ	فَاِنْ	فَآءُوْ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿226﴾	وَاِنْ
महीने	फिर अगर	वो रुजूअ कर करलें	तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	और अगर

عَزَمُوا	الطَّلَاقَ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ ﴿227﴾	وَالْمُطَلَّقٰتُ
वो अज़्म कर लें	तलाक़ का	तो बेशक	अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	और जो तलाक़ याफ्ता औरतें हैं

يَتَرَبَّصْنَ	بِاَنْفُسِهِنَّ	ثَلٰثَةَ	قُرُوْٓءٍ ؕ	وَلَا	يَحِلُّ	لَهُنَّ	اَنْ
वो इंतिज़ार में रखें	अपने आपको	तीन	हैज़/ तोहर	और नहीं	हलाल	उनके लिए	कि

يَّكْتُمْنَ	مَا	خَلَقَ	اللّٰهُ	فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ	اِنْ	كُنَّ	يُؤْمِنَّ
वो छुपाऐं	जो	पैदा किया	अल्लाह ने	उनके रहमों में	अगर	हैं वो	वो ईमान रखतीं

بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	وَبُعُوْلَتُهُنَّ	اَحَقُّ	بِرَدِّهِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	और शौहर उनके	ज़्यादा हक़दार हैं	उनको लौटाने के	उसमें

اِنْ	اَرَادُوْٓا	اِصْلَاحًا ؕ	وَلَهُنَّ	مِثْلُ	الَّذِيْ	عَلَيْهِنَّ
अगर	वो इरादा करें	इस्लाह का	और उनके लिए है	मानिंद	उसके जो	उनके ज़िम्मा है

بِالْمَعْرُوْفِ ۪	وَلِلرِّجَالِ	عَلَيْهِنَّ	دَرَجَةٌ ؕ	وَاللّٰهُ	عَزِيْزٌ
साथ मारूफ़ तरीक़े के	और मर्दों के लिए	उन (औरतों) पर	एक दर्जा है	और अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है

ع 28 7 12

حَكِيْمٌ ﴿228﴾ ع	اَلطَّلَاقُ	مَرَّتٰنِ ۪	فَاِمْسَاكٌ	بِمَعْرُوْفٍ	اَوْ
बहुत हिक्मत वाला है	तलाक़	दो बार है	फिर रोक लेना है	साथ भले तरीक़े के	या

تَسْرِيْحٌ	بِاِحْسَانٍ ؕ	وَلَا	يَحِلُّ	لَكُمْ	اَنْ	تَاْخُذُوْا
रुख़्सत कर देना है	साथ एहसान के	और नहीं	हलाल हो सकता	तुम्हारे लिए	कि	तुम ले लो

مِمَّآ	اٰتَيْتُمُوْهُنَّ	شَيْـًٔا	اِلَّآ	اَنْ	يَّخَافَآ	اَلَّا
उसमें से जो	दे दिया है तुमने उन्हें	कुछ भी	मगर	ये कि	वो दोनों डरें	कि ना

يُقِيْمَا	حُدُوْدَ	اللّٰهِ ؕ	فَاِنْ	خِفْتُمْ	اَلَّا	يُقِيْمَا
वो दोनों क़ायम रख सकेंगे	हुदूद को	अल्लाह की	फिर अगर	खौफ़ खाओ तुम	कि ना	वो दोनों क़ायम रख सकेंगे

حُدُوْدَ	اللّٰهِ ۙ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْهِمَا	فِيْمَا	افْتَدَتْ
हुदूद को	अल्लाह की	तो नहीं	कोई गुनाह	उन दोनों पर	उस (चीज़) में जो	वो औरत फ़िदया दे दे

بِهٖ ؕ	تِلْكَ	حُدُوْدُ	اللّٰهِ	فَلَا	تَعْتَدُوْهَا ۚ	وَمَنْ	يَّتَعَدَّ
साथ उस (माल) के	ये	हुदूद हैं	अल्लाह की	तो ना	तुम तजावुज़ करना उनसे	और जो कोई	तजावुज़ करेगा

حُدُوْدَ	اللّٰهِ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الظّٰلِمُوْنَ ﴿229﴾	فَاِنْ	طَلَّقَهَا
हुदूद से	अल्लाह की	तो यही लोग हैं	वो	जो ज़ालिम हैं	फिर अगर	वो तलाक़ दे दे उसे

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

غَيْرَهٗ ؕ	زَوْجًا	تَنْكِحَ	حَتّٰى	مِنْۢ بَعْدُ	لَهٗ	تَحِلُّ	فَلَا
उसके इलावा	शौहर से	वो निकाह कर ले	यहां तक कि	बाद इसके	उसके लिए	वो हलाल हो सकती	तो नहीं

يَّتَرَاجَعَآ	اَنْ	عَلَيْهِمَآ	جُنَاحَ	فَلَا	طَلَّقَهَا	فَاِنْ
वो बाहम रुजूअ कर लें	यह कि	उन दोनों पर	कोई गुनाह	तो नहीं	वो तलाक़ दे दे उसे	फिर अगर

حُدُوْدُ	وَتِلْكَ	اللّٰهِ ؕ	حُدُوْدَ	يُّقِيْمَا	اَنْ	ظَنَّآ	اِنْ
हुदूद हैं	और ये	अल्लाह की	हुदूद को	वो दोनों क़ायम रखेंगे	कि	वो दोनों समझें	अगर

النِّسَآءَ	طَلَّقْتُمُ	وَاِذَا	يَّعْلَمُوْنَ ﴿230﴾	لِقَوْمٍ	يُبَيِّنُهَا	اللّٰهِ
औरतों को	तुम तलाक़ दे दो	और जब	जो इल्म रखते हैं	उन लोगों के लिए	वो वाज़ेह करता है इन्हें	अल्लाह की

سَرِّحُوْهُنَّ	اَوْ	بِمَعْرُوْفٍ	فَاَمْسِكُوْهُنَّ	اَجَلَهُنَّ	فَبَلَغْنَ
रुख़सत कर दो उन्हें	या	साथ भले तरीक़े के	तो रोक लो उन्हें	अपनी मुद्दत को	फिर वो पहुंचे

وَمَنْ	لِّتَعْتَدُوْا ۚ	ضِرَارًا	تُمْسِكُوْهُنَّ	وَلَا	بِمَعْرُوْفٍ ۖ
और जो कोई	ताकि तुम ज़्यादती करो	तकलीफ देने के लिए	तुम रोके रखो उन्हें	और ना	साथ भले तरीक़े के

اٰيٰتِ اللّٰهِ	تَتَّخِذُوْٓا	وَلَا	نَفْسَهٗ ؕ	ظَلَمَ	فَقَدْ	ذٰلِكَ	يَّفْعَلْ
अल्लाह की आयत को	तुम बनाओ	और ना	अपने नफ़्स पर	उसने ज़ुल्म किया	तो तहक़ीक़	ऐसा	करेगा

عَلَيْكُمْ	اَنْزَلَ	وَمَآ	عَلَيْكُمْ	اللّٰهِ	نِعْمَتَ	وَّاذْكُرُوْا	هُزُوًا ۡ
तुम पर	उसने नाज़िल किया	और जो	जो तुम पर है	अल्लाह की	नेअमत	और याद करो	मज़ाक़

وَاعْلَمُوْٓا	اللّٰهَ	وَاتَّقُوا	بِهٖ ؕ	يَعِظُكُمْ	وَالْحِكْمَةِ	مِّنَ الْكِتٰبِ
और जान लो	अल्लाह से	और डरो	साथ उसके	वो नसीहत करता है तुम्हें	और हिक्मत से	किताब से

النِّسَآءَ	طَلَّقْتُمُ	وَاِذَا	عَلِيْمٌ ﴿231﴾ ع	شَيْءٍ	بِكُلِّ	اللّٰهَ	اَنَّ
औरतों को	तलाक़ दे दो तुम	और जब	खूब जानने वाला है	चीज़ को	हर	अल्लाह	बेशक

ع 29 3 13

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَبَلَغْنَ	اَجَلَهُنَّ	فَلَا	تَعْضُلُوْهُنَّ	اَنْ	يَّنْكِحْنَ	اَزْوَاجَهُنَّ
फिर वो पहुंचे	अपनी मुद्दत को	तो ना	तुम रोको उन्हें	कि	वो निकाह करलें	अपने शौहरों से

اِذَا	تَرَاضَوْا	بَيْنَهُمْ	بِالْمَعْرُوْفِ ؕ	ذٰلِكَ	يُوْعَظُ	بِهٖ
जब	वो बाहम रज़ामंद हो जाऐं	आपस में	भले तरीक़े से	ये (बात)	नसीहत की जाती है	साथ इसके

مَنْ	كَانَ	مِنْكُمْ	يُؤْمِنُ	بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	ذٰلِكُمْ
उसको जो	हो	तुममें से	ईमान रखता	अल्लाह पर	और आख़िरी दिन पर	ये (बात)

اَزْكٰى	لَكُمْ	وَاَطْهَرُ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ	وَاَنْتُمْ	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿232﴾
ज़्यादा पाकीज़ा है	तुम्हारे लिए	और ज़्यादा पाक है	और अल्लाह	जानता है	और तुम	नहीं तुम जानते

وَالْوَالِدٰتُ	يُرْضِعْنَ	اَوْلَادَهُنَّ	حَوْلَيْنِ	كَامِلَيْنِ	لِمَنْ
और मांऐं	दूध पिलाऐं	अपनी औलाद को	दो साल	मुकम्मल	उसके लिए जो

اَرَادَ	اَنْ	يُّتِمَّ	الرَّضَاعَةَ ؕ	وَعَلَى	الْمَوْلُوْدِ لَهٗ	رِزْقُهُنَّ
इरादा करे	कि	वो पूरा करे	रज़ाअत की मुद्दत	और ऊपर	उस (वालिद) के बच्चा है जिसका	ख़ुराक है उन औरतों की

وَكِسْوَتُهُنَّ	بِالْمَعْرُوْفِ ؕ	لَا تُكَلَّفُ	نَفْسٌ	اِلَّا	وُسْعَهَا ۚ
और लिबास है उन औरतों का	भले तरीक़े से	ना तकलीफ़ दिया जाए	कोई नफ़्स	मगर	उसकी वुसअत के मुताबिक़

لَا تُضَآرَّ	وَالِدَةٌ ۢ	بِوَلَدِهَا	وَلَا	مَوْلُوْدٌ لَّهٗ	بِوَلَدِهٖ ۚ
ना नुक़्सान पहुंचाया जाए	वालिदा को	उसके बच्चे की वजह से	और ना	वालिद को	उसके बच्चे की वजह से

وَعَلَى	الْوَارِثِ	مِثْلُ	ذٰلِكَ ۚ	فَاِنْ	اَرَادَا	فِصَالًا
और ऊपर	वारिस के है	मिसल	उसी के	फिर अगर	वो दोनों इरादा कर लें	दूध छुड़ाने का

عَنْ تَرَاضٍ	مِّنْهُمَا	وَتَشَاوُرٍ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْهِمَا ؕ	وَاِنْ
बाहम रज़ामंदी से	उन दोनों की	और बाहम मशवरे से	तो नहीं	कोई गुनाह	उन दोनों पर	और अगर

أَرَدْتُّمْ	أَنْ	تَسْتَرْضِعُوْٓا	أَوْلَادَكُمْ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ
इरादा करो तुम	कि	तुम दूध पिलवाओ	अपनी औलद को	तो नहीं	कोई गुनाह	तुम पर

إِذَا	سَلَّمْتُمْ	مَّآ	اٰتَيْتُمْ	بِالْمَعْرُوْفِ ؕ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاعْلَمُوْٓا
जब	सुपुर्द करो तुम	जो	देना था तुमने	मारूफ़ तरीक़े से	और डरो	अल्लाह से	और जान लो

أَنَّ	اللّٰهَ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ (233)	وَالَّذِيْنَ	يُتَوَفَّوْنَ
बेशक	अल्लाह	उसे जो	तुम करते हो	ख़ूब देखने वाला है	और वो जो	फ़ौत कर लिए जाते हैं

مِنْكُمْ	وَيَذَرُوْنَ	أَزْوَاجًا	يَّتَرَبَّصْنَ	بِأَنْفُسِهِنَّ	أَرْبَعَةَ
तुम में से	और वो छोड़ जाते हैं	बीवियां	वो इंतिज़ार में रखें	अपने आप को	चार

أَشْهُرٍ	وَّعَشْرًا ج	فَإِذَا	بَلَغْنَ	أَجَلَهُنَّ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ
महीने	और दस (दिन)	फिर जब	वो पहुंचे	अपनी इद्दत को	तो नहीं	कोई गुनाह	तुम पर

فِيْمَا	فَعَلْنَ	فِيْٓ أَنْفُسِهِنَّ	بِالْمَعْرُوْفِ ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا
उसमें जो	वो करें	अपने नफ़्सों के बारे में	मारूफ़ तरीक़े से	और अल्लाह	उसकी जो

تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرٌ (234)	وَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ	فِيْمَا	عَرَّضْتُمْ
तुम करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला है	और नहीं	कोई गुनाह	तुम पर	उसमें जो	इशारा करो तुम

بِهٖ	مِنْ خِطْبَةِ	النِّسَآءِ	أَوْ	أَكْنَنْتُمْ	فِيْٓ أَنْفُسِكُمْ ؕ	عَلِمَ
साथ उसके	पैग़ामे निकाह से	औरतों के	या	छुपाए रखो तुम	अपने नफ़्सों में	जानता है

اللّٰهُ	أَنَّكُمْ	سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ	وَلٰكِنْ	لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ	سِرًّا	إِلَّآ
अल्लाह	कि बेशक तुम	ज़रूर तुम ज़िक्र करोगे उनका	और लेकिन	ना तुम वादा लो उनसे	छुप कर	मगर

أَنْ	تَقُوْلُوْا	قَوْلًا	مَّعْرُوْفًا ۬ۥ	وَلَا	تَعْزِمُوْا	عُقْدَةَ	النِّكَاحِ
ये कि	तुम कहो	बात	भली	और ना	तुम अज़्म करो	अक़्द का	निकाह के

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

حَتّٰى	يَبْلُغَ	الْكِتٰبُ	اَجَلَهٗ ؕ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُ
यहां तक कि	पहुंच जाए	मुक़र्रर मियाद	अपनी मुद्दत को	और जान लो	बेशक	अल्लाह	जानता है

مَا	فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ	فَاحْذَرُوْهُ ۚ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ
उसे जो	तुम्हारे नफ़्सों में है	पस डरो उससे	और जान लो	बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है

ع 30 4 14

حَلِيْمٌ ﴿235﴾	لَا جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ	اِنْ	طَلَّقْتُمُ	النِّسَآءَ	مَا	لَمْ
बहुत बुर्दबार है	नहीं कोई गुनाह	तुम पर	अगर	तलाक़ दे दो तुम	औरतों को	जबकि	ना

تَمَسُّوْهُنَّ	اَوْ	تَفْرِضُوْا	لَهُنَّ	فَرِيْضَةً ۖۚ	وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ
तुमने छुआ हो उन्हें	या	तुमने मुक़र्रर किया	उनके लिए	कोई महर	और माल व मता दो उन्हें

عَلَى الْمُوْسِعِ	قَدَرُهٗ	وَعَلَى	الْمُقْتِرِ	قَدَرُهٗ ۚ	مَتَاعًا
ऊपर वुसअत वाले के	उसकी वुसअत के मुताबिक़	और ऊपर	तंगदस्त के	उसकी वुसअत के मुताबिक़	फ़ायदा पहुंचाना है

بِالْمَعْرُوْفِ ۚ	حَقًّا	عَلَى	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿236﴾	وَاِنْ	طَلَّقْتُمُوْهُنَّ
भले तरीक़े से	हक़ है	ऊपर	नेकी करने वालों के	और अगर	तलाक़ दे दो तुम उन्हें

مِنْ قَبْلِ	اَنْ	تَمَسُّوْهُنَّ	وَقَدْ	فَرَضْتُمْ	لَهُنَّ	فَرِيْضَةً
इससे पहले	कि	तुमने छुआ उन्हें	और तहक़ीक़	मुक़र्रर कर दिया था तुमने	उनके लिए	कोई महर

فَنِصْفُ	مَا	فَرَضْتُمْ	اِلَّآ	اَنْ	يَّعْفُوْنَ	اَوْ	يَعْفُوَا
तो आधा है	उसका जो	मुक़र्रर कर चुके तुम (महर)	मगर	ये कि	वो (औरतें) माफ़ करदें	या	माफ़ कर दे

الَّذِيْ	بِيَدِهٖ	عُقْدَةُ	النِّكَاحِ ؕ	وَاَنْ	تَعْفُوْٓا	اَقْرَبُ
वो शख़्स	जिसके हाथ में है	गिरह	निकाह की	और ये कि	तुम माफ़ कर दो	ज़्यादा क़रीब है

لِلتَّقْوٰى ؕ	وَلَا	تَنْسَوُا	الْفَضْلَ	بَيْنَكُمْ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	بِمَا
तक़वा के	और ना	तुम भूलो	एहसान को	आपस में	बेशक	अल्लाह	उसे जो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ (237)	حٰفِظُوْا	عَلَى الصَّلَوٰتِ	وَالصَّلٰوةِ	الْوُسْطٰى ق
तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	हिफ़ाज़त करो	सब नमाज़ों की	और नमाज़	दर्मियानी की

وَقُوْمُوْا	لِلّٰهِ	قٰنِتِيْنَ (238)	فَاِنْ	خِفْتُمْ	فَرِجَالًا	اَوْ
और खड़े हो जाओ	अल्लाह के लिए	फरमांबरदार बन कर	फ़िर अगर	ख़ौफ़ हो तम्हें	तो पैदल(पढ़ लो)	या

رُكْبَانًا ج	فَاِذَآ	اٰمِنْتُمْ	فَاذْكُرُوا	اللّٰهَ	كَمَا	عَلَّمَكُمْ	مَّا	لَمْ
सवार होकर	फिर जब	अमन में आ जाओ तुम	तो याद करो	अल्लाह को	जैसा कि	उसने सिखाया तुम्हें	जो	नहीं

تَكُوْنُوْا	تَعْلَمُوْنَ (239)	وَالَّذِيْنَ	يُتَوَفَّوْنَ	مِنْكُمْ	وَيَذَرُوْنَ
थे तुम	तुम जानते	और वो लोग जो	फ़ौत कर लिए जाते हैं	तुममें से	और वो छोड़ जाते हैं

اَزْوَاجًا صلے ج	وَّصِيَّةً	لِّاَزْوَاجِهِمْ	مَّتَاعًا	اِلَى الْحَوْلِ	غَيْرَ
बीवियां	वसीयत (करें)	अपनी बीवियों के लिए	फ़ायदा पहुंचाने की	एक साल तक	बग़ैर

اِخْرَاجٍ ج	فَاِنْ	خَرَجْنَ	فَلَا	جُنَاحَ	عَلَيْكُمْ	فِيْ مَا	فَعَلْنَ
निकालने के	फिर अगर	वो निकल जाऐं	तो नहीं	कोई गुनाह	तुम पर	उस मामले में जो	वो करें

فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ	مِنْ مَّعْرُوْفٍ ط	وَاللّٰهُ	عَزِيْزٌ	حَكِيْمٌ (240)
अपने नफ़्सों के बारे में	भले तरिक़े से	और अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ	مَتَاعٌ	بِالْمَعْرُوْفِ ط	حَقًّا	عَلَى الْمُتَّقِيْنَ (241)
और तलाक़ याफ़्ता औरतों को	फायदा पहुंचाना है	भले तरिक़े से	हक़ है	मुत्तक़ी लोगों पर

كَذٰلِكَ	يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمْ	اٰيٰتِهٖ	لَعَلَّكُمْ	تَعْقِلُوْنَ (242) ع	اَلَمْ
इसी तरह	वाज़ेह करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	अपनी आयात को	ताकि तुम	तुम अक़्ल से काम लो	क्या नहीं

ع 31 7 15

تَرَ	اِلَى	الَّذِيْنَ	خَرَجُوْا	مِنْ دِيَارِهِمْ	وَهُمْ	اُلُوْفٌ
आपने देखा	तरफ़	उनके जो	निकल गए	अपने घरों से	और वो	हज़ारों थे

حَذَرَ	الْمَوْتِ ص	فَقَالَ	لَهُمُ	اللّٰهُ	مُوْتُوْا قف	ثُمَّ	اَحْيَاهُمْ ط
बचने के लिए	मौत से	तो कहा	उन्हें	अल्लाह ने	मर जाओ	फिर	उसने ज़िंदा किया उन्हें

اِنَّ	اللّٰهَ	لَذُوْ فَضْلٍ	عَلَى النَّاسِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ
बेशक	अल्लाह	यक़ीनन फ़ज़्ल वाला है	लोगों पर	और लेकिन	अक्सर	लोग

لَا يَشْكُرُوْنَ 243	وَقَاتِلُوْا	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَاعْلَمُوْٓا	اَنَّ	اللّٰهَ
नहीं वो शुक्र करते	और जंग करो	अल्लाह के रास्ते में	और जान लो	बेशक	अल्लाह

سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ 244	مَنْ	ذَا الَّذِيْ	يُقْرِضُ	اللّٰهَ	قَرْضًا	حَسَنًا
ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	कौन है	वो जो	क़र्ज़ दे	अल्लाह को	क़र्ज़	अच्छा

فَيُضٰعِفَهٗ	لَهٗٓ	اَضْعَافًا	كَثِيْرَةً ط	وَاللّٰهُ	يَقْبِضُ	وَيَبْصُۜطُ ص
तो वो बढ़ा दे उसे	उसके लिए	कई गुना	ज़्यादा	और अल्लाह	तंगी करता है	और वो कुशादगी करता है

وَاِلَيْهِ	تُرْجَعُوْنَ 245	اَلَمْ	تَرَ	اِلَى	الْمَلَاِ	مِنْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
और तरफ़ उसी के	तुम लौटाए जा ओगे	क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़	सरदारों के	बनी इस्राईल में से

مِنْ بَعْدِ	مُوْسٰى م	اِذْ	قَالُوْا	لِنَبِيٍّ	لَّهُمُ	ابْعَثْ	لَنَا
बाद	मूसा के	जब	उन्होंने कहा	नबी के लिए	अपने	मुक़र्रर कर	हमारे लिए

مَلِكًا	نُّقَاتِلْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط	قَالَ	هَلْ	عَسَيْتُمْ	اِنْ
एक बादशाह	हम लड़ें	अल्लाह के रास्ते में	उसने कहा	क्या	उम्मीद है तुमसे	अगर

كُتِبَ	عَلَيْكُمُ	الْقِتَالُ	اَلَّا	تُقَاتِلُوْا ط	قَالُوْا	وَمَا	لَنَآ
लिख दिया जाए	तुम पर	जंग करना	कि ना	तुम लड़ो	उन्होंने कहा	और क्या है	हमें

اَلَّا	نُقَاتِلَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَقَدْ	اُخْرِجْنَا	مِنْ دِيَارِنَا
कि ना	हम लड़ें	अल्लाह के रास्ते में	हालांकि तहक़ीक़	निकाले गए हम	अपने घरों से

وقف لازم

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَلِيْلًا	اِلَّا	تَوَلَّوْا	الْقِتَالُ	عَلَيْهِمُ	كُتِبَ	فَلَمَّا	وَ اَبْنَآئِنَا ؕ
थोड़े से	मगर	तो वो फिर गए	लड़ना	उन पर	लिख दिया गया	फिर जब	और अपने बेटों से

نَبِيُّهُمْ	لَهُمْ	وَقَالَ	بِالظّٰلِمِيْنَ (246)	عَلِيْمٌۢ	وَاللّٰهُ	مِّنْهُمْ ؕ
उनके नबी ने	उन्हें	और कहा	ज़ालिमों को	ख़ूब जानने वाला है	और अल्लाह	उनमें से

اَنّٰى	قَالُوْٓا	مَلِكًا ؕ	طَالُوْتَ	لَكُمْ	بَعَثَ	قَدْ	اللّٰهَ	اِنَّ
कैसे	उन्होंने कहा	बादशाह	तालूत को	तुम्हारे लिए	मुक़र्रर कर दिया है	तहक़ीक़	अल्लाह ने	बेशक

مِنْهُ	بِالْمُلْكِ	اَحَقُّ	وَنَحْنُ	عَلَيْنَا	الْمُلْكُ	لَهُ	يَكُوْنُ
उससे	बादशाहत के	ज़्यादा हक़दार हैं	हालांकि हम	हम पर	बादशाहत	उसके लिए	हो सकती है

اصْطَفٰىهُ	اللّٰهَ	اِنَّ	قَالَ	مِّنَ الْمَالِ ؕ	سَعَةً	يُؤْتَ	وَلَمْ
चुन लिया है उसे	अल्लाह ने	बेशक	उसने कहा	माल से	वुसअत	वो दिया गया	और नहीं

يُؤْتِيْ	وَاللّٰهُ	وَالْجِسْمِ ؕ	فِي الْعِلْمِ	بَسْطَةً	وَزَادَهٗ	عَلَيْكُمْ
देता है	और अल्लाह	और जिस्म में	इल्म में	वुसअत	और उसने ज़्यादा दी है उसे	तुम पर

لَهُمْ	وَقَالَ	عَلِيْمٌ (247)	وَاسِعٌ	وَاللّٰهُ	يَّشَآءُ ؕ	مَنْ	مُلْكَهٗ
उन्हें	और कहा	ख़ूब जानने वाला है	वुसअत वाला है	और अल्लाह	वो चाहता है	जिसे	बादशाहत अपनी

فِيْهِ	التَّابُوْتُ	يَّاْتِيَكُمُ	اَنْ	مُلْكِهٖٓ	اٰيَةَ	اِنَّ	نَبِيُّهُمْ
जिसमें	ताबूत / संदूक़	आ जाएगा तुम्हारे पास	कि	उसकी बादशाहत की	निशानी	बेशक	उनके नबी ने

اٰلُ مُوْسٰى	تَرَكَ	مِّمَّا	وَبَقِيَّةٌ	مِّنْ رَّبِّكُمْ	سَكِيْنَةٌ
आले मूसा	छोड़ गए	उसमें से जो	और बाक़ी मांदा	तुम्हारे रब की तरफ़ से	तस्कीन है

لَاٰيَةً	فِيْ ذٰلِكَ	اِنَّ	الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ	تَحْمِلُهُ	وَاٰلُ هٰرُوْنَ
अलबत्ता एक निशानी है	उसमें	बेशक	फ़रिश्ते	उठाए हुए होंगे उसे	और आले हारून

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 32 6 16

لَّكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿248﴾ ع	فَلَمَّا	فَصَلَ	طَالُوْتُ
तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	पस जब	जुदा हुआ	तालूत

بِالْجُنُوْدِ ۙ	قَالَ	اِنَّ	اللّٰهَ	مُبْتَلِيْكُمْ	بِنَهَرٍ ۚ	فَمَنْ
साथ लश्करों के	उसने कहा	बेशक	अल्लाह	आज़माने वाला है तुम्हें	एक नहर से	तो जिसने

شَرِبَ	مِنْهُ	فَلَيْسَ	مِنِّيْ ۚ	وَمَنْ	لَّمْ	يَطْعَمْهُ	فَاِنَّهٗ
पिया	उससे	तो नहीं वो	मुझसे	और जिसने	ना	चखा उसे	तो बेशक वो

مِنِّيْٓ	اِلَّا	مَنِ	اغْتَرَفَ	غُرْفَةً	بِيَدِهٖ ۚ	فَشَرِبُوْا	مِنْهُ
मुझसे है	मगर	जो	चुल्लु भर ले	एक चुल्लु	अपने हाथ से	तो उन्होंने पी लिया	उससे

اِلَّا	قَلِيْلًا	مِّنْهُمْ ؕ	فَلَمَّا	جَاوَزَهٗ	هُوَ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
मगर	बहुत थोड़े	उनमें से	फिर जब	उसने पार किया उसे	उसने	और उन्होंने जो	ईमान लाए थे

مَعَهٗ ۙ	قَالُوْا	لَا طَاقَةَ	لَنَا	الْيَوْمَ	بِجَالُوْتَ	وَجُنُوْدِهٖ ؕ
साथ उसके	उन्होंने कहा	नहीं कोई ताक़त	हमारे लिए	आज	साथ जालूत	और उसके लश्करों के

قَالَ	الَّذِيْنَ	يَظُنُّوْنَ	اَنَّهُمْ	مُّلٰقُوا	اللّٰهِ ۙ	كَمْ
कहा	उन्होंने जो	यक़ीन रखते थे	कि बेशक वो	मुलाक़ात करने वाले हैं	अल्लाह से	कितनी ही

مِّنْ فِئَةٍ	قَلِيْلَةٍ	غَلَبَتْ	فِئَةً	كَثِيْرَةًۢ	بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
जमाअतें	कम (तादाद) की	ग़ालिब आ जाती है	जमाअतों पर	कसीर(तदाद) की	अल्लाह के इज़्न से

وَاللّٰهُ	مَعَ	الصّٰبِرِيْنَ ﴿249﴾	وَلَمَّا	بَرَزُوْا	لِجَالُوْتَ	وَجُنُوْدِهٖ
और अलाह	साथ है	सब्र करने वालों के	और जब	वो सामने हुए	जालूत के	और उसके लश्करों के

قَالُوْا	رَبَّنَآ	اَفْرِغْ	عَلَيْنَا	صَبْرًا	وَّثَبِّتْ	اَقْدَامَنَا
उन्होंने कहा	ऐ हमारे रब	डाल दे	हम पर	सब्र	और जमा दे	हमारे क़दमों को

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاِذْنِ اللّٰهِ قف	فَهَزَمُوْهُمْ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿250﴾ ط	عَلَى الْقَوْمِ	وَانْصُرْنَا
अल्लाह के इज़्न से	तो उन्होंने शिकस्त दे दी उन्हें	जो काफ़िर है	उस क़ौम पर	और मदद कर हमारी

وَالْحِكْمَةَ	الْمُلْكَ	اللّٰهُ	وَاٰتٰىهُ	جَالُوْتَ	دَاوٗدُ	وَقَتَلَ
और हिक्मत	बादशाहत	अल्लाह ने	और अता की उसे	जालूत को	दाऊद ने	और क़त्ल कर दिया

النَّاسَ	اللّٰهِ	دَفْعُ	وَلَوْلَا	يَشَآءُ ط	مِمَّا	وَعَلَّمَهٗ
लोगों को	अल्लाह का	हटा देना	और अगर ना होता	उसने चाहा	उसमें से जो	और उसने सिखाया उसे

اللّٰهَ	وَلٰكِنَّ	الْاَرْضُ	لَّفَسَدَتِ	بِبَعْضٍ لا	بَعْضَهُمْ
अल्लाह	और लेकिन	ज़मीन में	अलबत्ता फ़साद फैल जाता	साथ बाज़ के	उनके बाज़ को

نَتْلُوْهَا	اللّٰهِ	اٰيٰتُ	تِلْكَ	عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿251﴾	ذُوْ فَضْلٍ
हम पढ़ते हैं इन्हें	अल्लाह की	आयात हैं	ये	तमाम जहांन वालों पर	फ़ज़्ल वाला है

لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿252﴾	وَاِنَّكَ	بِالْحَقِّ ط	عَلَيْكَ
अल्लबता रसूलों में से हैं	और बेशक आप	साथ हक़ के	आप पर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION